RNI No. MPHIN/2018/76422

बेबाकी के साथ...सच

माही की गूंज

Www.mahikigunj.in, Email-mahikigunj@gmail.com

सुविचार

यह प्रार्थना ना करें कि हमारे ऊपर खतरे न आएं,

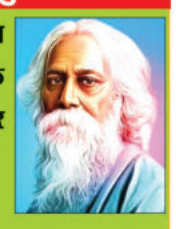

बल्कि यह प्रार्थना करें कि हम उनका निडरता से सामना कर सकें।

रवीन्द्रनाथ टेगोर

वर्ष-08, अंक - 27 (साप्ताहिक) खवासा, गुरूवार 16 अप्रेल 2026 पृष्ठ-8, मूल्य -5 रुपए

आखिर कहां गुम हो रहे हमारे भारतीय संस्कार...!

माही की गूंज, झाबुआ डेस्क।

संजय भटेवरा

वर्तमान दौर में रिश्तों को तार-तार करने वाली कई घटनाएं लगातार सामने आ रही है। जिसके चलते कई बुद्धिजीवी यह सोचने को मजबूर है कि, क्या ऐसे ही भविष्य की कल्पना हमारे पूर्वजों ने की थी...? कहने को तो हम आज सभ्य समाज और एआई तकनीकी में जी रहे हैं। लेकिन वो सभ्यता और आधुनिकता तब तक बेकार है जब तक की मानवीय संवेदना और भावनात्मक जैसे गुण ना हो।

वर्तमान में फूहड़ टीवी सीरियल एक और जहां हमारे सामाजिक ताना-बाना नष्ट कर रहे हैं, परिवार को तोड़ रहे हैं। यहां तक की परिवार की मुख्य पृष्ठभूमि पति-पत्नी के रिश्तों को भी शर्मशार कर रहे हैं। कहते हैं साहित्य समाज का दर्पण होता है, वर्तमान के दौर में ना तो श्रेष्ठ साहित्य या सिनेमा है और ना ही उस स्तर का समाज है। एक और जहां हमारे समाज में पति को परमेश्वर का दर्जा दिया गया है, उनकी लंबी उम्र की भी कामना के लिए करवा चौथ जैसे व्रत किए जाते हैं। लेकिन वर्तमान युग की नारी अपने परमेश्वर यानी अपने पति की हत्या करने में जरा भी संकोच नहीं कर रही है।

इंदौर के राजा रघुवंशी हत्याकांड की यादें धुंधली भी नहीं पड़ी थी कि, धार जिले में एक और इसी प्रकार का हत्याकांड सामने आया है। धार जिले की प्रियंका पुरोहित, ग्वालियर की रूबी और मंदसौर जिले की धापु बाई की कहानी सामने आ गई है, जहां रिश्तो की कड़वाहट और अवैध संबंध मौत की वजह बन रही है। इस प्रकार की घटनाएं लगातार बढ़ती जा रही है आए दिन कहीं ना कहीं ऐसी घटनाएं होती है और इनकी संख्याए लगातार बढ़ती जा रही हैं। जिसके बाद बुद्धिजीवी यह सोचने को मजबूर है कि, आखिर मानवता ओर इंसानियत और कितना गिरेगी...? क्या इसी प्रकार की टेक्नोलॉजी व उज्जवल भविष्य की कल्पना हमारे पूर्वजों ने की थी...?

निश्चित रूप से इस प्रकार की घटनाएं समाज में निंदनीय है। देश के बुद्धिजीवियों को यह तय करना है कि, हम हमारे समाज को कहां ले जाना चाहते हैं...? धार जिले की घटना में पत्नी ने ही अपने प्रेमी के माध्यम से अपने पति की हत्या की सुपारी दी और घटना को लूट की वारदात साबित करने की कोशिश की। वही मंदसौर जिले का भी ऐसा ही किस्सा सामने आया है जिसमें 39 साल का किसान धनराज जो खेती के माध्यम से अपने परिवार का भरण-पोषण करता था उसे पत्नी और प्रेमी ने मिलकर मौत के घाट उतार दिया। मंदसौर के दुधाखेड़ी गांव के रहने वाले धनराज के गायब होने की सूचना खुद पत्नी धापूबाई ने भानपुरा थाने में पहुंचकर दी और प्रेमी के साथ मिलकर ऐसा नाटक रचा कि, कहानी सत्य प्रतीत हो। लेकिन इंदौर की सोनम रघुवंशी और धार की प्रियंका पुरोहित की तरह मंदसौर की धापूबाई का नाटक भी ज्यादा नहीं चला और पुलिस जांच में जो कहानी सामने आई वो हैरानी के साथ कई सवालों को पैदा करने वाली भी है। जहां एक और केंद्र सरकार नारी शक्ति वंदन अधिनियम लागू करके महिलाओं को 33 प्रतिशत आरक्षण देने का प्रयास कर रही है। वही समाज में इस प्रकार की महिलाएं, महिलाओं को ही कलंकित करने का कारनामा कर रही है। हैरानी की बात यह है कि, इस प्रकार की घटनाएं बड़े शहरों और महानगरों में नहीं बल्कि छोटे-छोटे गांव में भी घटित हो रही है। हालांकि अपराध, अपराध होता है, उसका गांव और शहर से कोई लेना-देना नहीं है। लेकिन कहते हैं कि, भारत की आत्मा गांवों में बसती है और इस प्रकार की घटनाएं देश की आत्मा को ठेस पहुंचा रही है।

झाबुआ की घटना भी शर्मनाक

इन घटनाओं के बीच झाबुआ जिले में भी जिले को शर्मशार करने वाली एक घटना सामने आई है। काकनवानी थाना क्षेत्र में एक महिला के बाल काटकर उसके पति को कंधे पर बैठा कर सार्वजनिक रूप से घुमाया गया। घटना का वीडियो सामने आने के बाद पुलिस ने तत्परता दिखाते हुए चार आरोपियो को गिरफ्तार कर लिया। उक्त घटनाओं में एक चीज समान है वो है अवैध संबंध...!

इस घटना में भी पत्नी पर आरोप है कि, उसने अपने पति को छोड़कर दूसरे के पास चली गई थी। जिसके बाद सामाजिक पंचायत के माध्यम से उसे वापस लाया गया और इस प्रकार की तालिबानी सजा का फरमान सुनाया गया।

समाज में फैल रहे इन अपराधों को रोकने के लिए केवल पुलिस ही नहीं बल्कि समाज के वरिष्ठ लोगों को भी आगे आना होगा है।

नई टेक्नोलॉजी निश्चित रूप से हमारे लिए उपयोगी है, लेकिन यह नई टेक्नोलॉजी सामाजिकता को नष्ट कर रही है, इंसान की सहनशीलता और धैर्यता का नाश हो रहा है। एक और जहां युवा वर्ग क्षणिक असफलता से आत्महत्या जैसे कदम उठा रहे हैं वहीं सामाजिक रिश्तों को छिन्न-भिन्न करने वाली इस प्रकार की घटनाएं मानवता को शर्मसार कर रही है जो चिंतनिय है।

श्रद्धालुओं की बस पलटी, छह की मौत, 15 घायल

फतेहगढ़ साहिब।

पंजाब के फतेहगढ़ साहिब जिले में बैसाखी पर्व से लौट रहे श्रद्धालुओं के साथ एक दर्दनाक सड़क हादसा हो गया। देर रात श्रद्धालुओं से भरी एक निजी बस अनियंत्रित होकर बिजली के खंभे से टकराने के बाद पलट गई। इस दुर्घटना में छह लोगों की मौके पर ही मृत्यु हो गई, जबकि लगभग 15 अन्य गंभीर रूप से घायल हो गए। घायलों में महिलाएं और बच्चे भी शामिल हैं, जिन्हें उपचार के लिए निकटवर्ती अस्पतालों में भर्ती कराया गया है।

प्राप्त जानकारी के अनुसार, फतेहगढ़ साहिब क्षेत्र से लगभग 40 श्रद्धालुओं का एक जत्था बैसाखी पर्व पर आनंदपुर साहिब में दर्शन करने और मेले में शामिल होने गया था। देर रात जब सभी लोग बस से लौट रहे थे, तभी मार्ग में यह हादसा हुआ। प्रत्यक्षदर्शियों और प्रारंभिक जांच के अनुसार, चलती बस में अचानक तकनीकी खराबी आने से चालक वाहन पर नियंत्रण खो बैठा। अनियंत्रित बस सड़क किनारे स्थित बिजली के खंभे से टकराकर पलट गई। टक्कर इतनी तेज थी कि बस का एक हिस्सा बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया और यात्रियों में अफरा-तफरी मच गई। घटना की सूचना मिलते ही स्थानीय लोग और पुलिस मौके पर पहुंचे। अंधेरा होने के कारण बचाव कार्य में कठिनाई हुई, लेकिन प्रयासों के बाद बस में फंसे यात्रियों को बाहर निकाला गया। पुलिस ने तुरंत एंबुलेंस की सहायता से घायलों को मोरिंडा और फतेहगढ़ साहिब के शासकीय अस्पतालों में पहुंचाया। गंभीर घायलों को बेहतर उपचार के लिए बड़े चिकित्सालयों में भेजे जाने की जानकारी है। पुलिस ने क्रेन की सहायता से क्षतिग्रस्त बस को हटवाकर मार्ग पर आवागमन सुचारू कराया।

सत्ता परिवर्तनः चौधरी ने मुख्यमंत्री पद की शपथ ली

पटना। बिहार की राजनीति में एक नया अध्याय जुड़ गया, जब भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष सम्राट चौधरी ने राज्य के मुख्यमंत्री के रूप में पद और गोपनीयता की शपथ ली। राज्यपाल सैयद अता हसनैन ने लोकभवन में आयोजित समारोह में उन्हें शपथ दिलाई। यह पहली बार है जब राज्य की बागडोर पूर्ण रूप से भारतीय जनता पार्टी के नेतृत्व में सौंपी गई है।

यह परिवर्तन नीतीश कुमार के मुख्यमंत्री पद से त्यागपत्र देने और उच्च सदन में जाने के निर्णय के बाद हुआ। लगभग दो दशकों तक राज्य का नेतृत्व करने के बाद उन्होंने पद छोड़ा, जिसके पश्चात भारतीय जनता पार्टी के विधायक दल की बैठक में सम्राट चौधरी को सर्वसम्मति से नेता चुना गया।

नई सरकार में संतुलन बनाए रखने के उद्देश्य से जनता दल (यूनाइटेड) के वरिष्ठ नेता विजय चौधरी और बिजेंद्र यादव ने उपमुख्यमंत्री पद की शपथ ली। राजनीतिक विश्लेषकों का माननाहै कि यह निर्णय राज्य में भारतीय जनता पार्टी की स्थिति को और सुदृढ़ करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है।

उच्च न्यायालय की अंतरिम अग्रिम जमानत पर पवन खेड़ा को रोक

नई दिल्ली।

कांग्रेस नेता पवन खेड़ा को सर्वोच्च न्यायालय से बड़ा झटका लगा है। शीर्ष अदालत ने बुधवार को सुनवाई करते हुए तेलंगाना उच्च न्यायालय द्वारा दी गई अंतरिम अग्रिम जमानत पर रोक लगा दी। यह मामला असम पुलिस द्वारा दर्ज मानहानि और जालसाजी के आरोपों से संबंधित है।

दरअसल, असम के मुख्यमंत्री हेमंत बिस्वा सरमा की पत्नी रिनिकी भुइयां शर्मा ने पवन खेड़ा के विरुद्ध प्रकरण दर्ज कराया था। खेड़ा पर आरोप है कि उन्होंने रिनिकी भुइयां के पास कई देशों के पासपोर्ट होने का दावा किया था, जिससे विवाद उत्पन्न हुआ। संभावित गिरफ्तारी से बचने के लिए पवन खेड़ा ने तेलंगाना उच्च न्यायालय का रुख किया था, जहां से उन्हें एक सप्ताह की अंतरिम अग्रिम जमानत प्राप्त हुई थी। हालांकि, इस आदेश को असम सरकार ने सर्वोच्च न्यायालय में चुनौती दी, जिस पर अब शीर्ष अदालत ने रोक लगा दी है।

मामले की सुनवाई न्यायमूर्ति जे.के. माहेश्वरी और न्यायमूर्ति अतुल एस. चंदुरकर की पीठ ने की। न्यायालय ने अपने आदेश में स्पष्ट किया कि यदि पवन खेड़ा असम के सक्षम न्यायालय में अग्रिम जमानत के लिए आवेदन करते हैं, तो इस अंतरिम आदेश का उस पर कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ेगा। सुनवाई के दौरान असम सरकार की ओर से उपस्थित सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने तेलंगाना उच्च न्यायालय के अधिकार क्षेत्र पर प्रश्न उठाए। उन्होंने तर्क दिया कि, जब कथित अपराध गुवाहाटी में हुआ, तो तेलंगाना उच्च न्यायालय का क्षेत्राधिकार कैसे बनता है।

इसके अतिरिक्त आधार कार्ड से जुड़े एक पक्ष पर भी बहस हुई। न्यायालय को बताया गया कि याचिका दायर करते समय पवन खेड़ा की ओर से उनकी पत्नी का आधार पत्र प्रस्तुत किया गया था, ताकि तेलंगाना से संबंध दर्शाया जा सके। इस पर सॉलिसिटर जनरल ने आपत्ति जताते हुए इसे विधि का दुरुपयोग बताया।

सर्वोच्च न्यायालय ने इस पर गंभीर टिप्पणी करते हुए कहा कि अभिलेखों में प्रस्तुत दस्तावेजों से प्रथम दृष्टया यह प्रतीत होता है कि अधिकार क्षेत्र का अनुचित लाभ उठाने का प्रयास किया गया।

सभी पक्षों की दलीलें सुनने के बाद सर्वोच्च न्यायालय ने तेलंगाना उच्च न्यायालय के आदेश पर तत्काल प्रभाव से रोक लगा दी तथा मामले में नोटिस जारी कर तीन सप्ताह के भीतर उत्तर मांगा है।

जिला कलेक्टरों की फहरिस्त में एक और नया नाम, जिलेवासियों को नए कलेक्टर से काफी उम्मीदें

माही की गूंज, झाबुआ।

वैसे तो जिले में कई कलेक्टर आए और गए, आगे भी यह क्रम जारी रहेगा। लेकिन कुछ बिरले ही कलेक्टर जिले में रहे जिनकी कार्यशैली आज भी जिलेवासियों के मन मस्तिष्क के पटल पर दर्ज है। एक लंबे और उबाउ कार्यकाल के बाद कलेक्टर नेहा मीना की जिले की रवानगी हुई है। आईएएस नेहा मीना ने पहली बार किसी जिले की कमान संभाली थी जब उनकी झाबुआ जिले में पद स्थापना हुई थी। कलेक्टर नेहा मीना का कार्यकाल कुछ खास नहीं रहा। इसको लेकर लोगों की अपनी-अपनी राय है। लेकिन जिस तरह की उम्मीदें जिलेवासियों को उनसे थी वे शायद उन पर खरा उतरने में नाकाम रही है। चूंकि झाबुआ जिला एक आदिवासी बाहुल जिला है और इस जिले में अक्सर नए आईएएस अधिकारी आते रहे है। जिसके चलते यह जिला हमेशा से आईएएस अधिकारियों की प्रयोग शाला बना नजर आता रहा है। इस बार भी जिले को फिर एक नए आईएएस अधिकारी कलेक्टर योगेश तुकाराम भरसट के रूप में मिले है। इसे जिले का सौभाग्य भी कहा जाना चाहिए कि, लगातार तीन महिला कलेक्टरों के बाद कोई पुरूष कलेक्टर जिले में मिला है।

वैसे तो जिले ने कई कलेक्टर देखे है, लेकिन कुछ जिलेवासियों के मन को भा गए तो कुछ भुला दिए गए। कहते है काम ऐसा करो कि लोग याद रखें। कुछ कलेक्टर जिले में ऐसे आए है जिन्हे भुला पाना जिलेवासियों के लिए नामुमकिन है। कुछ ऐसे भी कलेक्टर रहे जो बहुत कम कार्यकाल में जिले का नक्शा बदलने की ताकत रखते थे। लेकिन ऐसे अधिकारी जिले की राजनीतिक सरगर्मियों को पसंद नहीं आते। उसके उलट कुछ अधिकारी जिले में ऐसे आए जिन्होने जिले की राजनीतिक स्थितियों भामाशाहों को अपनी जूती की नोक रखा और नेतागिरी उनका कुछ ना बिगाड़ सकी। कलेक्टर नेहा मीना एक ऐसी ही कलेक्टर रही जिनसे जिले के राजनीतिक दल, रसूख रखने वाले नेता भी खासे परेशान रहे। नेताओं के अनुसार मेडम उनकी किसी तरह की सुनवाई ही नहीं करती थी। हालांकि सुनवाई तो मेडम वाकई में किसी की नहीं करती थी। उन्हे वे लोग पसंद आते थे जो उनके राग में राग मिलाते रहे। आलोचकों की उनके आसपास कोई जगह नहीं थी। इसके विपरीत आलोचक हमेशा उनके द्वेष्तापूर्ण रवैये का सामना करते रहे। अब कलेक्टर नेहा मीना जिले से रवाना हो चुकी है, तो हर तरफ एक अलग ही शांति और खुशी का माहौल देखा जा रहा है। राजनीतिक गलियारों में भी खूब खुशियां मन रही है, तो आमजन का बहुमत भी इस ओर ज्यादा दिखाई दे रहा है।

जिले में आए नए कलेक्टर योगेश तुकाराम भरसट भी पहली बार कलेक्टरी संभाल रहे है और उन्हे झाबुआ जिला कलेक्टरी करने के लिए मिला है। एक लंबे अंतराल के बाद जिले को कोई पुरूष आइएएस अधिकारी मिला है। लगातार तीन महिला कलेक्टरों के लंबे कार्यकाल में जिले में कुछ खास विकास का पहियां घूमता नजर नहीं आया है। अब जिलेवासियों को उम्मीद है कि, जिले में पदस्थ हुए नए कलेक्टर इस विकास के पहिये को तेजी से चलाएंगे। हालांकि जिलेवासियों में एक आशंका जरूर दिखाई दे रही है कि, यह कलेक्टर भी कहीं पिछले कलेक्टरों की तरह जिले को प्रयोग शाला ना बना लें। वरना जिले का विकास धरा का धरा ही रह जाएगा। चूंकि वास्तिविक स्थिति में आजादी के लगभग आठ दशक बाद जिले में विकास की जो स्थिति है वह काफी चिंता जनक ही मानी जा रही है। आजादी के इतने समय बाद भी जिला पूरे देश में गरीबी और अशिक्षा के मामले में दूसरे पायदान पर है।

जिले में आए नए कलेक्टर योगेश तुकाराम भरसट से अब जिलेवासियों को बहुत उम्मीदें है कि, वे इस जिले के लिए कुछ खास करेगें। पद भार ग्रहण करने के बाद से जो कार्य शैली कलेक्टर भरसट की दिख रही है वह कई उम्मीदों के दिये जला रही है। आते ही कलेक्टर भरसट एक्शन मूड में दिखाई दे रहे है। अधिकारियों की बैठक ले कर उन्हे एक माह में अपने-अपने कार्य क्षेत्र में प्रगति दिखाने के लिए कहा गया है और चेतावनी दी गई है कि, इसके बाद सख्ती बरती जाएगी। आने के तुरंत बाद कलेक्टर भरसट ने ताबड़तोड़ स्वास्थ्य केंद्रों, छात्रावासों और शासकीय कार्यालयों का औचक निरीक्षण शुरू कर दिया है। कई जगह कमियां भी देखने को मिल रही है। सुधार के सख्त निर्देश भी दिए जा रहे है। हालांकि जिले के लिए यह कोई नई बात नहीं है। क्योंकि इससे पहले भी कई कलेक्टर ऐसे आए जिन्होने उस कहावत को चरितार्थ किया कि ''नया मुल्ला जरा जोर से ही अजान देता है।'' जिले में आने वाले अक्सर फ्रेसर आइएएस अधिकारी इसी तरह से तमतमाते हुए आते है लेकिन जैसे-जैसे समय गुजरता है उनके तेवर भी ढीले पड़ते नजर आते है।

बावजूद इसके जिलेवासियों को फिर से उम्मीद है कि, जिले में आने वाले नए कलेक्टर साहब जिले की विकास यात्रा को चार चांद लगाएगें। माही की गूंज भी जिले में पधारे नए कलेक्टर योगेश तुकाराम भरसट से शुभकामनाओं सहीत यही उम्मीद रखता है। उम्मीद यह भी है कि, कलेक्टर साहब जिले में आकर जिस तरह से अपने वक्तव्यों में जिले के विकास की कार्य योजना बता रहे है वे उन पर पूरी ईमानदारी के साथ कायम रहेगें। माही की गूंज हमेशा से ही एक अच्छा प्रसंशक ना होकर एक अच्छा आलोचक रहा है। बुद्धिजीवियों का कहना भी है कि, हजार प्रसंशकों से एक आलोचक अच्छा होता है जो आपकी कमियों को बताकर आपको मजबूत करता है।

बहरहाल पिछले कलेक्टरों को माही की गूंज की आलोचना, सुधार के बदले द्वेशता तक ले आई थी। लेकिन उम्मीद है कि, पुराने कलेक्टरों और नए कलेक्टर की कार्य शैली में जमीन-आसमान का फर्क होगा। और यह फर्क समय के साथ-साथ और अधिक दिखाई देगा। हालांकि कलेक्टर भरसट को इस जिले में कार्य करने के लिए सावधानियां जरूर बरतना पड़ेगी। क्योंकि जिला कलेक्ट्रोरेट कार्यालय में चापलूसों की कोई कमी नहीं है। जिले में अंगद की तरह जमें अधिकारी अपने कर्तव्य से ज्यादा कलेक्टरों की चापलूसी पर ज्यादा ध्यान देते है। नतीजा यह कि कलेक्टर, चापलूसों पर ध्यान नहीं देते। पूर्व कलेक्टर के कार्यकाल का एक ऐसा ही दुष्परिणाम यह सामने आया कि पिछले छः माह में जिला कलेक्टर कार्यालय से दो अधिकारी रिश्वत लेते रंगे हाथों पकड़े गए। जिन जनपदों के लिए कलेक्टर ने भोपाल और दिल्ली में अवार्ड लिए उन्ही जनपदों में करोड़ों के घोटाने भी उसी समय उजागर हुए। ततसमय हालात ऐसे बन गए थे कि, अवार्ड की वाहवाही एक तरफ और करोड़ों के घोटाले की थू-थू एक तरफ। तो जरूरी यह है कि, नवागत कलेक्टर सावधानी बरते और चापलूसों के चंगुल से थोड़ा बच के रहे।

एक बार फिर माही की गूंज जिले में पधारे नवागत कलेक्टर योगेश तुकाराम भरसट का स्वागत करता है और शुभकामनाएं देता है कि, जिले में आपका कार्यकाल सफल हो, उज्जवल हो और आपकी उत्तरोत्तर तरक्की के साथ जिला भी विकास की रफ्तार को पकड़े...

जिले के साथ खवासा का परीक्षा परिणाम भी रहा बेहतर

माही की गूंज, खवासा।

कभी अशिक्षा का दंश झेल चुके झाबुआ जिले में इस वर्ष बेहतर परीक्षा परिणाम हासिल कर पूरे मध्य प्रदेश में हाई सैकेंडरी में प्रथम तथा हाई स्कूल में पांचवा स्थान प्राप्त किया। निश्चित रूप से जिले वासियों के लिए यह गौरवमयी क्षण है। जिले की होनहार बेटी शासकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय राणापुर की कुमारी सीमा भयड़िया कक्षा दसवीं में 500 में से 495 अंक प्राप्त कर पूरे मध्य प्रदेश में पांचवा स्थान प्राप्त किया है। तथा वाणिज्य संकाय में थांदला के अणु पब्लिक स्कूल की छात्रा हर्षी लुणावत ने प्रदेश की मेरिट सूची में छटा स्थान प्राप्त किया। वहीं अगर प्रदेश स्तर की बात करें तो इस वर्ष झाबुआ जिले ने हाई स्कूल परीक्षा में 93.23 प्रतिशत सफलता के साथ प्रदेश में पांचवा स्थान प्राप्त किया। वहीं हाई स्कूल में 87.83 प्रतिशत परिणाम के साथ शीर्ष पांच में अपनी जगह बनाई।

वही खवासा क्षेत्र का परीक्षा परिणाम भी इस वर्ष बेहतर रहा। यहां सांदीपनि विद्यालय खवासा में 10वीं का परिणाम 95.29 तथा हाई सैकेंडरी का परिणाम 95.65 प्रतिशत रहा। संस्था में कलिह तौलसिंह सिंगाड 394 अंकों के साथ 78.8 प्रतिशत के साथ प्रथम रहे। वहीं द्वितीय स्थान पर 76.2 प्रतिशत के साथ विश्वजीत सिंह करण सिंह चावड़ा तथा तृतीय स्थान पर 74.6 प्रतिशत के साथ मनोज रामलाल गरवाल रहे। वही हाई स्कूल में अविनाश पुंजालाल कटारा 80.8 प्रतिशत प्रथम, सुरजीत प्रकाश डामर 72.2 प्रतिशत तथा पिंटू नारसिंग 72 प्रतिशत अंकों के साथ तीसरे स्थान पर रहे।

कुमारी सीमा भयडिया राणापुर।

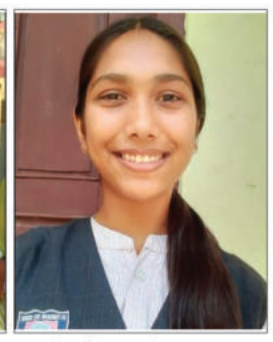
हिमाली इंदरमल चौपड़ा खवासा।

चिंकी पाटीदार खवासा।

शा कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय खवासा का हाई सैकेंडरी परीक्षा परिणाम शत प्रतिशत रहा। वहीं हाई स्कूल परीक्षा में 98.59 प्रतिशत परीक्षा परिणाम रहा। यहां हाई सैकेंडरी में प्रथम तीन स्थान पर दिव्या अशोक प्रजापति 80.8 प्रतिशत, कुमारी खुशबू पूजा लाल कटारा 80.6 प्रतिशत, मुस्कान मुकेश प्रजापति 80.4 प्रतिशत रहे। वहीं हाई स्कूल में हर्षिता चन्द्र शेखर परमार 92.8 प्रतिशत, खुशी अशोक प्रजापति 89.2 प्रतिशत, आशा गणपत कटारा 85.8 प्रतिशत तथा सुमित्रा वालचंद भूरिया 84.6 प्रतिशत अंकों के साथ शीर्ष स्थानो पर रहे। समीपस्थ हाई स्कूल भामल का परीक्षा परिणाम शत प्रतिशत रहा यहां की छात्रा कुमारी कलावती कमल डाँगी ने 91.4 प्रतिशत अंक प्राप्त किए।

वहीं अगर निजी संस्थाओ में देखे तो हर बार की तरह इस वर्ष भी सत्य साई कान्वेंट स्कूल का परीक्षा परिणाम अच्छा रहा, संस्था में हाई स्कूल परीक्षा में कशिश कालू सिंह राठौड़ 88.8 प्रतिशत, कृतिका विकास पटेल 88.4 प्रतिशत तथा प्रिया मोती सिंह भाभर 80.6 प्रतिशत अंक प्राप्त किए। वहीं हाई सैकेंडरी परीक्षा में चिंकी दिनेश पाटीदार 89 प्रतिशत, दिव्या मयंक पाटीदार 88.2 प्रतिशत तथा सोनाक्षी जितेंद्र पटेल 88 प्रतिशत अंकों के साथ टॉप स्कोर रहे।

संत तेरेसा स्कूल में भी हाई स्कूल तथा हाई सैकेंडरी का परीक्षा परिणाम 100 प्रतिशत रहा। यहां हाई स्कूल में हिमाली इन्दरमल चोपड़ा 96.6 प्रतिशत तथा हाई सैकेंडरी में संस्कृति कमलेश क्षौत्रीय 87 प्रतिशत अंकों के साथ टॉप पर रही।

ग्राम की एक अन्य निजी संस्था न्यू हाईट्स पब्लिक स्कूल में हाई स्कूल का परीक्षा परिणाम 94 प्रतिशत तथा हाई सैकेंडरी का परीक्षा परिणाम 90 प्रतिशत रहा यहां शीर्ष स्थानो पर हायर सैकेंडरी में लमेश पाटीदार 84 प्रतिशत, तनमय यादव 62 प्रतिशत, विनय पाटीदार 61.2 प्रतिशत रहे। वही हाई स्कूल परीक्षा में करन डामोर को 89.6 प्रतिशत प्रथम तथा द्वितीय स्थान पर 63 प्रतिशत अंकों के साथ निकिता प्रजापति तथा रानू कटारा रहै। वही तृतीय स्थान पर रौनक मैड़ा और गौरव रहे।

समीपस्थ हाई स्कूल चापानेर लक्ष्मी कालू मुणिया ने 82 प्रतिशत अंक प्राप्त किए उल्लेखनीय है कि, छात्रा लक्ष्मी खो-खो की अच्छी खिलाड़ी भी है और उन्होंने राज्य स्तरीय खो-खो प्रतियोगिता में भी भाग लेकर संस्था और ग्राम का गौरव बढ़ाया था और हाई स्कूल परीक्षा परिणाम भी बेहतर लाकर संस्था को गोरवान्वित किया। उनकी इस उपलब्धि पर संस्था के शिक्षकों तथा इष्ट मित्रों ने बधाई दी है।

शानदार परिणाम पर कलेक्टर ने दी बधाई

माही की गूंज, झाबुआ।

झाबुआ जिले के नवागत कलेक्टर डॉ. योगेश तुकाराम भरसट ने माध्यमिक शिक्षा मंडल द्वारा घोषित हाई स्कूल एवं हायर सैकेंडरी परीक्षा परिणामों में जिले के उत्कृष्ट प्रदर्शन पर समस्त विद्यार्थियों, अभिभावकों एवं शिक्षकों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं दी हैं।

कलेक्टर ने अपने संदेश में कहा कि, हायर सैकेंडरी में 93.23 प्रतिशत परिणाम के साथ प्रदेश में प्रथम स्थान एवं हाई स्कूल में 87.83 प्रतिशत परिणाम के साथ प्रदेश के शीर्ष 5 जिलों में स्थान प्राप्त करना झाबुआ जिले के लिए अत्यंत गर्व का विषय है। यह उपलब्धि विद्यार्थियों की कड़ी मेहनत, शिक्षकों के समर्पित मार्गदर्शन तथा अभिभावकों के सहयोग का प्रतिफल है।

उन्होंने सभी सफल विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए कहा कि, यह सफलता आगे और बेहतर प्रदर्शन के लिए प्रेरणा बने। साथ ही आगामी वर्ष में शत-प्रतिशत परिणाम प्राप्त करने के लक्ष्य के साथ अभी से तैयारी प्रारंभ करने का आह्वान किया।

कलेक्टर ने जिले की प्रतिभाशाली छात्रा कु. सीमा भयडिया पिता श्री कांतिलाल भयडिया, शा. कन्या उ.मा.वि. राणापुर को कक्षा 10वीं में 495 अंक प्राप्त कर प्रदेश में पांचवां स्थान अर्जित करने पर विशेष बधाई दी। इसी प्रकार अणु पब्लिक स्कूल, थांदला की छात्रा हर्षि लूणावत को वाणिज्य संकाय में प्रदेश में छठवां स्थान प्राप्त करने पर भी हार्दिक शुभकामनाएं देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

बाबा साहेब की 135 वीं जयंती, प्रतिभाओं का हुआ सम्मान

माही की गूंज, पेटलावद।

भारत रत्न डॉ. भीमराव अंबेडकर की 135वीं जयंती के अवसर पर पेटलावद नगर में भव्य एवं प्रेरणादायी कार्यक्रम का आयोजन किया गया। डॉ आंबेडकर समरसता समाज सेवा समिति द्वारा आयोजित इस समारोह में प्रतिभा सम्मान, सेवानिवृत्त कर्मचारियों का अभिनंदन एवं विशाल वाहन रैली जैसे विविध आयोजन आकर्षण का केंद्र रहे। कार्यक्रम की शुरुआत अंबेडकर बस्ती स्थित बाबा साहेब की प्रतिमा पर माल्यार्पण के साथ हुई । कार्यक्रम में स्थानीय जनप्रतिनिधि उपस्थित रहे।

कार्यक्रम के दौरान वक्ताओं ने बाबा साहेब के जीवन, उनके संघर्ष, सामाजिक समता के लिए किए गए प्रयासों एवं उनके विचारों पर विस्तृत प्रकाश डाला। सभी ने एक स्वर में उनके बताए मार्ग पर चलने का आह्वान किया।

समारोह में शासकीय सेवा से सेवानिवृत्त कर्मचारियों का शाल, श्रीफल एवं स्मृति चिन्ह देकर सम्मान किया गया। साथ ही कक्षा 5वीं, 8वीं , 10 वी एवं 12वीं में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को ट्रॉफी एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान कर उनका उत्साहवर्धन किया गया।

कार्यक्रम में प्रशासनिक दल की भी विशेष उपस्थिति रही। इस आयोजन में विभिन्न सामाजिक एवं धार्मिक संगठनों की सक्रिय भागीदारी देखने को मिली। आंगनबाड़ी कार्यकर्ता, शिक्षा विभाग के अधिकारी-कर्मचारी, हिंदू जागरण मंच, विश्व हिंदू परिषद, भीम आर्मी सहित आसपास के क्षेत्रों रायपुरिया, बामनिया,सारंगी आदि से बड़ी संख्या में भीम अनुयायी एवं नागरिक उपस्थित रहे। कार्यक्रम का सफल संचालन समिति के उपाध्यक्ष एडवोकेट राजेश यादव द्वारा किया गया, जबकि अंत में आभार प्रदर्शन जगदीश जाटव ने किया। समारोह के उपरांत नगर में भव्य वाहन रैली निकाली गई, जिसमें बड़ी संख्या में युवाओं एवं समाजजनों ने भाग लिया। पूरा नगर बाबा साहेब के जयघोष से गूंज उठा।

अच्छा परिणामः एसडीएम ने प्रशस्ति पत्र देकर किया सम्मान

माही की गूंज, थांदला।

अणु पब्लिक स्कूल की 12 वी वाणिज्य संकाय की छात्रा हर्षि प्राची अर्पित लुणावत ने (485/500) 97 प्रतिशत अंकों के साथ उत्तीर्ण होकर झाबुआ जिलें में प्रथम स्थान अर्जित किया है। वही मध्यप्रदेश में भी छटी रेंक हासिल किया। अपने परिवार, अपनी स्कूल का ही नही अपितु पूरे जिलें का नाम रोशन किया है। उसकी इस उपलब्धि पर स्कूल में जश्न मनाया गया जहाँ हर्षि के साथ अन्य श्रेष्ठ अंक अर्जित करने वालें नमन नागर (477/500) 95.4 प्रतिशत, हंसिका कपिल पाठक (467/500) व तनिष्क राठौड़ (467/500) 93.4 प्रतिशत आदि बच्चों व उनके अभिभावकों का सम्मान किया गया।

थांदला क्षेत्र से हर्षि लुणावत सहित अन्य बच्चों के श्रेष्ठ अंक अर्जित करने एसडीएम भास्कर गाचले ने कार्यालय पर हर्षि उनके माता-पिता व स्कूल प्राचार्य को पुष्प माला पहना कर सम्मानित किया। इस अवसर पर एसडीएम ने सभी बच्चों को बधाई देते हुए इसे पूरे क्षेत्र के लिए गौरव का विषय बताया।

कर्नाटक में गुरु भैरवैक्य मंदिर का लोकार्पण, सांस्कृतिक विरासत को मिला नया आयाम

बेंगलुरु।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बुधवार को कर्नाटक के मांड्या स्थित आदिचुंचनगिरि क्षेत्र में गुरु भैरवैक्य मंदिर का लोकार्पण किया। यह कार्यक्रम उनके कर्नाटक दौरे के दौरान आयोजित हुआ, जो देश की समृद्ध आध्यात्मिक और सांस्कृतिक परंपराओं के सम्मान का एक महत्वपूर्ण अवसर रहा। इस मौके पर पूर्व प्रधानमंत्री एच.डी. देवेगौड़ा भी उपस्थित रहे। दोनों नेताओं ने संयुक्त रूप से 'सौंदर्य लहरी' और 'शिव महिम्न स्तोत्र' नामक पुस्तकों का विमोचन भी किया।

गुरु भैरवैक्य मंदिर आदिचुंचनगिरि महासंस्थान मठ के 71वें पीठाधीश्वर संत डॉ. बालगंगाधरनाथ महास्वामीजी को समर्पित एक भव्य स्मारक है। इस मंदिर का निर्माण पारंपरिक द्रविड़ स्थापत्य शैली में किया गया है, जो इसकी भव्यता और ऐतिहासिक महत्व को दर्शाता है। यह मंदिर संत के जीवन, उनके कार्यों और उनकी विरासत को समर्पित है तथा आने वाली पीढ़ियों के लिए आध्यात्मिक प्रेरणा का केंद्र माना जा रहा है। इसके माध्यम से समाज में एकता और सद्भाव का संदेश देने का भी उद्देश्य रखा गया है।

इस अवसर पर प्रधानमंत्री ने देशवासियों को रंगाली बिहू की शुभकामनाएं भी दीं। उन्होंने कहा कि यह पर्व नई शुरुआत, समृद्धि और एकता का प्रतीक है। उन्होंने कामना की कि यह वर्ष सभी के लिए सफलता, प्रसन्नता और उत्तम स्वास्थ्य लेकर आए।

प्रधानमंत्री ने अपने संबोधन में कहा कि रंगाली बिहू असम का प्रमुख त्योहार है, जो वसंत ऋतु के आगमन और कृषि कार्यों की शुरुआत का प्रतीक है। यह पर्व असमिया संस्कृति की समृद्ध परंपराओं को दर्शाता है, जो आज देश और विश्व में अपनी विशिष्ट पहचान बनाए हुए है। उनके इस संदेश ने देश की विविध सांस्कृतिक परंपराओं के सम्मान और एकता की भावना को और सुदृढ़ किया।

पराली प्रबंधन में मिसाल बनकर उभरे विश्वजीत

माही की गूंज, उज्जैन।

जिले के ग्राम रुनीजा, ब्लॉक बड़नगर के प्रगतिशील किसान विश्वजीत सिंह राठौर पिता श्री दिग्विजय सिंह राठौर , पिछले 3-4 वर्षों से नरवाई (पराली) प्रबंधन के क्षेत्र में पूरे क्षेत्र के लिए एक प्रेरणादायक मिसाल बनकर उभरे हैं। जबकि अधिकांश किसान फसल कटाई के बाद खेत में बची हुई नरवाई को आग लगा देते हैं।

विश्वजीत सिंह राठौर ने पर्यावरण की रक्षा, मिट्टी की उर्वरता संरक्षण और सतत कृषि के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दिखाते हुए वैज्ञानिक एवं जैविक पद्धति अपनाई है।

राठौर ने सबसे पहले रोटावेटर का उपयोग कर खेत में बिछी नरवाई को छोटे-छोटे टुकड़ों में काटकर मिट्टी के साथ मिला दिया। इसके बाद उन्होंने इफ्को के बायो-डीकंपोजर का प्रभावी उपयोग किया।डीकंपोजर घोल तैयार करने की विधि इफ्को बायो-डीकंपोज़र की 1 बोतल को 200 लीटर पानी में 2 किलो गुड़ के साथ अच्छी तरह मिलाकर 5 से 7 दिनों तक छाया में रखा गया। तैयार घोल को खेत में नरवाई पर समान रूप से स्प्रे किया गया, जिसके बाद हल्की जुताई की गई। यह संपूर्ण प्रक्रिया 26 बीघा क्षेत्र में शासन की मंशा एवं कृषि विभाग की देखरेख में सफलतापूर्वक लागू की गई। जिससे नरवाई तेजी से सड़कर मिट्टी में मिल गयी, मिट्टी में जैविक कार्बन की मात्रा में उल्लेखनीय वृद्धि हुई,मिट्टी की नमी बनाए रखने की क्षमता बढ़ी, फसल उत्पादन में सकारात्मक सुधार दर्ज किया गया?।

गातार 3-4 वर्षों से इस जैविक तकनीक को अपनाने के कारण विश्वजीत सिंह राठौर के खेत की मिट्टी की गुणवत्ता में निरंतर सुधार हो रहा है। उनकी यह सफलता सिद्ध करती है कि आधुनिक विज्ञान और जैविक विधियों का संयोजन खेती को न सिर्फ अधिक लाभकारी बना सकता है, बल्कि पर्यावरण अनुकूल और टिकाऊ भी बना सकता है। विश्वजीत सिंह राठौर का यह प्रयास अन्य किसान भाइयों के लिए एक जीवंत उदाहरण है। उन्होंने साबित कर दिया है कि यदि किसान परंपरागत जलाने की बजाय वैज्ञानिक तरीके अपनाएं तो न सिर्फ पर्यावरण बचता है, बल्कि उनकी अपनी मिट्टी भी स्वस्थ और उपजाऊ बनी रहती है।

कलेक्टर ने गेहूं उपार्जन केंद्रों का किया निरीक्षण

माही की गूंज, झाबुआ।

कलेक्टर डॉ. योगेश तुकाराम भरसट ने जिले में गेहूं उपार्जन की स्थिति का जायजा लेते हुए आदिम जाति सेवा सहकारी संस्था मर्यादित रायपुरिया एवं बहुउद्देशीय प्राथमिक कृषि साख सहकारी सोसायटी मर्या. (बी. पेक्स) झकनावदा का निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने उपार्जन की अद्यतन स्थिति, स्लॉट बुकिंग व्यवस्था, उपार्जन केंद्रों पर उपलब्ध तोल कांटों की संख्या एवं उनकी क्षमता की विस्तृत जानकारी ली।

निरीक्षण के दौरान कलेक्टर ने उपार्जन केंद्रों पर उपस्थित किसानों से सीधे संवाद कर व्यवस्थाओं के बारे में फीडबैक प्राप्त किया। उन्होंने किसानों से पेयजल, छाया एवं अन्य आवश्यक सुविधाओं की उपलब्धता के संबंध में जानकारी ली। बढ़ते तापमान को ध्यान में रखते हुए कलेक्टर ने संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए कि किसानों के लिए वै एवं छाछ जैसे पेय पदार्थों की समुचित व्यवस्था सुनिश्चित की जाए।

कलेक्टर ने उपार्जन केंद्रों पर स्वयं जाकर गेहूं तौलने की प्रक्रिया तथा बारदानों में भंडारण की व्यवस्था का निरीक्षण किया। उन्होंने अधिकारियों को निर्देशित किया कि उपार्जित गेहूं का समय पर उठाव सुनिश्चित किया जाए, ताकि केंद्रों पर अनावश्यक भंडारण की स्थिति न बने।

स्लॉट बुकिंग से संबंधित समस्याओं पर चर्चा करते हुए कलेक्टर ने किसानों को अवगत कराया कि, शासन स्तर से 24 अप्रैल तक स्लॉट बुकिंग विंडो खुली रखी गई है। साथ ही एक तोल कांटे पर प्रतिदिन 1000 क्विंटल की सीमा को बढ़ाकर 1500 क्विंटल कर दिया गया है, जिससे अधिक मात्रा में उपार्जन संभव हो सकेगा।

कलेक्टर ने संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए कि उपार्जन कार्य पारदर्शिता एवं सुचारू रूप से संपन्न हो, इसके लिए सभी आवश्यक व्यवस्थाएं समय पर सुनिश्चित की जाएं।

अंडमान सागर में नाव पलटने से 250 यात्री लापता, रोहिंग्या शरणार्थी भी शामिल

श्री विजयपुरम।

अंडमान सागर में मलेशिया जा रही एक नाव के पलटने से कम से कम 250 लोग लापता हो गए हैं। लापता लोगों में म्यांमार के रोहिंग्या शरणार्थी और बांग्लादेश के नागरिक शामिल हैं। यह घटना बेहतर भविष्य की तलाश में जोखिम भरी यात्राएं करने को मजबूर लोगों की स्थिति को उजागर करती है। बुधवार तक खोज अभियान की स्थिति स्पष्ट नहीं हो सकी है और यह भी निश्चित नहीं हो पाया है कि नाव कब डूबी। यह जानकारी संयुक्त राष्ट्र शरणार्थी उच्चायुक्त और अंतरराष्ट्रीय प्रवासन संगठन ने दी है।

एजेंसियों के संयुक्त बयान के अनुसार यह नाव बांग्लादेश के कॉक्स बाजार जिले के टेकनाफ क्षेत्र से रवाना हुई थी और इसमें बड़ी संख्या में यात्री सवार थे, जो मलेशिया जा रहे थे। अधिक भीड़, तेज हवाओं और उफनते समुद्र के कारण नाव का संतुलन बिगड़ गया और वह डूब गई।

संयुक्त राष्ट्र की एजेंसियों ने बताया कि यह घटना रोहिंग्या समुदाय के लंबे समय से चले आ रहे विस्थापन और स्थायी समाधान के अभाव को दर्शाती है। म्यांमार के रखाइन प्रांत में जारी हिंसा के कारण उनकी सुरक्षित वापसी अभी भी अनिश्चित बनी हुई है। वहीं शरणार्थी शिविरों में सीमित सहायता, शिक्षा और रोजगार के अवसरों की कमी उन्हें जोखिम भरी समुद्री यात्राएं करने के लिए मजबूर कर रही है।

एजेंसियों ने अंतरराष्ट्रीय समुदाय से अपील की है कि बांग्लादेश में रह रहे रोहिंग्या शरणार्थियों के लिए जीवन रक्षक सहायता सुनिश्चित करने हेतु वित्तीय सहयोग और एकजुटता बढ़ाई जाए। उल्लेखनीय है कि बांग्लादेश ने म्यांमार से आए 10 लाख से अधिक रोहिंग्या शरणार्थियों को शरण दे रखी है।

जंगल में मोर नाचा किसने देखा उर्फ तीन दिवसीय पुस्तक मेला

व्यापारियों के लिए खाया पिया कुछ नहीं गिलास तोड़ा बारह आना

माही की गूंज, झाबुआ।
मुजम्मिल मंसुरी

जंगल में मोर नाचा किसने देखा यह मुहावरा इन दिनों जिला मुख्यालय पर लगे पुस्तक मेले और प्रशासन पर सटीक नजर आ रहा है। दरअसल यह पुस्तक मेला लगाया तो इसलिए गया था ताकि निजी स्कूलों, स्टेशनरी, यूनिफार्म सहित अन्य सामग्री किसी विशेष दुकान से बिकने की मोनोपॉली को रोका जा सके। लेकिन विडम्बना यह रही कि, इस मेले के बारे में लोगों को पता ही नहीं चला। तीन दिवसीय इस पुस्तक मेले में कुछ ही व्यापारियों ने अपनी दुकानें लगाई और वे भी ग्राहकों के आने का इंतजार भर करते रह गए। तीन दिन बाद जब व्यापारियों ने इस पुस्तक मेले से अपनी दुकानें समेटना शुरू की तो स्थिति यह थी कि ''खाया पिया कुछ नहीं गिलास तोड़ा बारह आना''। यानि मेले में ग्राहक तो आए नही लेकिन पुस्तक मेले में लगी कुछ दुकानों पर चोरों ने अपना हाथ साफ कर दिया। किस विकट परिस्थिति में प्रशासन ने ताबड़तोड़ यह पुस्तक मेला लगवाया था यह कहना तो मुश्किल है लेकिन नया शिक्षा सत्र शुरू हुए लगभग एक पखवाड़ा बीत चुका है और उसके बाद प्रशासन का यह पुस्तक मेला कई सवालों को जन्म दे रहा है। होना तो यह चाहिए था कि, नया शिक्षा सत्र शुरू होने के पहले इस पुस्तक मेले का आयोजन होना था। हालांकि व्यापारियों की अपनी व्यथा है। व्यापारियों के अनुसार जितना व्यापार नहीं मिला उससे ज्यादा का सामान चोरी चला गया। सामान लाने, ले जाने में जो खर्च हुआ सो अलग।

व्यापारियों का कहना है कि, प्रशासन ने इस पुस्तक मेले पर इतनी ताबड़तोड़ फैसला लिया कि, उन्हे सामान जमा करने और सैंपल इकट्ठा करने के लिए समय ही नहीं मिला। इसी वजह से इस पुस्तक मेले में कई व्यापारी नहीं पहुंचे। पुस्तक मेले में ना पहुंचने वाले व्यापारियों के अनुसार

स्कूलों ने अभी सिलेबस तय नहीं किया। यूनिफार्म में भी अगर बदलाव हो तो वह भी अभी नहीं पता। कुछ पुरानी किताबों में फेरबदल के कारण नई किताबें आना है। इन सारी परिस्थितियों के बावजूद प्रशासन ने अचानक जल्दबाजी में पुस्तक मेला लगाने की घोषणा कर दी। अधिकारियों को तो सिर्फ औपचारिकताएं पूरी करना थी तो उन्होने कर दी। अधिकारियों को भी उपर से निर्देश मिले थे कि पुस्तक मेला लगाना है।

प्रशासन ने ताबड़तोड़ निर्णय लेते हुए झाबुआ, रामा व राणापुर ब्लॉक के लिए झाबुआ के रातीतलाई स्कूल में मेला लगवा दिया। जबकि आमजन को इस पुस्तक मेले के बारे में कुछ पता ही नहीं चला। मेले में गिने-चुने ग्राहक ही पहुंचे। उन्हे भी कक्षा वार पुरी पुस्तकें मेले में नहीं मिल सकी। अब इस पुस्तक मेले पर कई सवाल खड़े होते नजर आ रहे है। प्रशासन ने इस मेले को लेकर व्यापक प्रचार-प्रसार क्यों नहीं किया? इस तरह के मेले के आयोजन में इतनी जल्दबाजी क्यों दिखाई गई? जबकि स्कूलों में अभी सिलेबस तक तय नहीं हो सके है। स्कूलों में अभी यूनिफार्म को लेकर भी संशय बना हुआ है। अगर बदलाव हुआ तो फिर क्या होगा? इस मेले से अगर कोई पुस्तकें खरीद लेता है और बाद में नई पुस्तकों में बदलाव हो जाए तो फिर उस स्थिति में क्या होगा? सबसे बड़ा सवाल यह कि, इस तरह का मेला जिन ब्लॉकों के लिए लगाया गया था क्या उन ब्लॉकों में इस पुस्तक मेले को लेकर व्यापक प्रचार प्रसार किया गया था? अगर नहीं तो फिर यह मेला लगाया ही क्यों गया? क्या उपर से निर्देश मिलने की दशा में जिला प्रशासन और अधिकारी इस महत्वपूर्ण पुस्तक मेले को लेकर सिर्फ माथा उतारने ही करेंगे? इस तरह के मेले का फिर क्या ही औचित्य रह जाता है?

अब जिला शिक्षा विभाग से समाचार पत्रों को यह वक्तव्य दिए जा रहे है कि, झाबुआ और थांदला में यह मेले लगे है। जहां नहीं लगे है वहां भी जिले के अन्य ब्लॉकों में भी इस तरह के पुस्तक मेले लगाए जाएंगे। तो क्या यह मान लिया जाए कि, जिले के अन्य ब्लॉकों में लगने वाले पुस्तक मेलों में भी प्रशासन और जिला अधिकारी इसी तरह माथा उतारनी करते दिखाई देंगे। क्योंकि परिस्थितियां तो इसी तरफ इशारा करती नजर आ रही है। बिना किसी स्थिति को जाने ही अधिकारी पुस्तक मेलों का आयोजन कर रहे है, क्योंकि उपर से निर्देश मिले है। जबकि होना तो यह चाहिए था कि, जिला प्रशासन और शिक्षा अधिकारी उच्च स्तर पर इस बात की जानकारी पहुंचाए कि, जिले की भोगोलिक स्थिति क्या है और शिक्षा प्रणाली की स्थिति क्या है। पुस्तक मेलों का आयोजन जिले में किस स्थिति में सफल होगा। यह सारी जानकारी उच्च स्तर के अधिकारियों तक पहुंचाई जानी चाहिए। ताकि इस तरह के पुस्तक मेलों का सही लाभ जिले के गरीब विद्यार्थियों को मिल सके। वरना शिक्षा के क्षेत्र में जिले को जो स्थिति वर्षों से बनी हुई है वह आगे भी बनी ही रहेगी।

क्षेत्र में इन दिनों आदिवासी समाज में जमकर शादी ब्याह का सीजन चल रहा है और लगभग सभी स्कूल छात्र -छात्राएं इसी में व्यस्त है। मंगलवार को कलेक्टर ने रामा में हॉस्टल का निरीक्षण किया तो स्थितियां चौकाने वाली सामने आई कि, 50 सीटर छात्रावास में एक भी बच्चा उपस्थित नहीं मिला। इस पर अधीक्षीका का जवाब यह था कि, शादियों के कारण बच्चे हॉस्टल में नहीं है। बताया यह जा रहा है कि, रामा ब्लॉक के सभी हॉस्टलों की स्थिति यही बनी हुई है। अब कल्पना की जा सकती है कि, जब कलेक्टर के निरीक्षण के दौरान छात्रावासों में एक भी बच्चा नहीं मिला तो फिर प्रशासन और शिक्षा विभाग के पुस्तक मेले में क्या बच्चे और पालक पुस्तकें खरीदनें पहुंचेंगे। कलेक्टर ने हॉस्टल निरीक्षण के बाद एसडीएम को मॉनिटरिंग करने के निर्देश दिए है और अधिकारियों को निर्देश दिए कि वे गांवों में जाकर पालकों को समझाईश दे कि, शादी नहीं पढ़ाई जरूरी है। कलेक्टर ने बीईओ और अधीक्षकों को नोटिस जारी करने को भी कहा है।

गोंदीखेड़ा हत्याकांड मृतक और हत्यारे का पेटलावद कनेक्शन

बेरहम हत्यारों को फांसी और पीड़ित परिवार को न्याय दिलाने की मांग

माही की गूंज ,पेटलावद।

धार जिले के थाना राजोद अंतर्गत ग्राम गोंदीखेड़ा चारण में हुए देवकृष्ण पुरोहित हत्याकांड को लेकर पेटलावद के सर्व हिन्दू समाज ने शनिवार को मौन रेली निकाल कर महामहिम राष्ट्रपति के नाम तहसीलदार अनिल बघेल को ज्ञापन सौंपा।

ज्ञापन के माध्यम से समाज ने मांग की है कि, इस जघन्य हत्याकांड के दोषियों को मृत्युदंड की सजा दी जाए और पीड़ित परिवार को उचित आर्थिक मुआवजा प्रदान किया जाए। राजगोर ब्राह्मण समाज के साथ सामाजिक संगठनों के प्रतिनिधि एवं विभिन्न समाजजनों की मौजूदगी में दिए ज्ञापन में उल्लेख किया कि, 7 अप्रैल 2026 की रात को मृतक देवकृष्ण की उसकी ही पत्नी प्रियंका ने अपने प्रेम प्रसंग के चलते प्रेमियों के साथ मिलकर निर्मम हत्या कर दी थी। पुलिस जांच में यह खुलासा हुआ है कि, इस दर्दनाक घटना की मास्टरमाइंड पत्नी ही थी। समाज ने इस बात पर गहरी चिंता व्यक्त की है कि वर्तमान में प्रेम प्रसंगों के चलते निर्दोष पुरुषों की हत्या और उन्हें झूठे केस में फंसाने की घटनाओं में लगातार वृद्धि हो रही हैं। जिससे सनातन संस्कृति और भारतीय परंपरा के मूल्यों का पतन हो रहा है। राजगोर ब्राह्मण समाज ने प्रशासन से फरार आरोपी सुरेन्द्र भाटी की अविलंब गिरफ्तारी की मांग करते हुए चेतावनी दी है कि, भविष्य में ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति रोकने के लिए सख्त नियम बनाए जाएं। ज्ञापन में इस बात पर भी जोर दिया कि विधवा माता लक्ष्मीबाई पुरोहित, जिन्होंने अपने इकलौते पुत्र को खोया है, उन्हें शासन की ओर से उचित संबल और मुआवजा दिया जाए ताकि उन्हें न्याय मिल सके। इस दौरान समाज के गणमान्य नागरिक और युवा बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

पेटलावद से जुड़ा पीड़ित ओर हत्यारे का परिवार

मृतक देवकृष्ण पुरोहित का परिवार पेटलावद से जुड़ा है, मृतक के पिता ने यही से पढ़ाई की थी और परिवार के अन्य सदस्य आज भी यही निवास करते हैं। वहीं हत्या को अंजाम देने वाला मृतक की पत्नी का प्रेमी का पिता भी यही का निवासी रहा है। इस हत्याकांड के खुलासे ने सभी को झकझोर के रख दिया।

बिजली की अघोषित कटौती से ग्रामीण परेशान

माही की गूंज, खवासा/भामल। सुनिल सोंलकी

खवासा विद्युत वितरण केंद्र के अंतर्गत आने वाले रंन्नी फिटर क्षेत्र में एक दर्जन से अधिक गांव में इन दिनों बिजली कटौती से ग्रामीणो को भारी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। गर्मी इन दिनों चरम पर है और यहां घंटो तक लाइट नहीं रहना ग्रामीणों को और भी परेशानियों से झूझ रहे है। लेकिन विद्युत विभाग के कर्मचारी समय से पहले कोई भी कार्य जल्दी निपटाने का करते ही नहीं। जिसके कारण ग्रामीण अंचलों रहने वाले ग्रामीणों को अघोषित कटौती से परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है।

जानकारीनुसार इन दिनों पुरानी रन्नी फिटर क्षेत्र के अंतर्गत आने वाली 11 केवी के नए सिरे से केबल व तार बदलने का कार्य यूपी की कंपनी आर वी एन एल इलेक्ट्रीशियन कंपनी को ठेका दिया गया है। जो 5 किलोमीटर तक नए सिरे से तार बिछाने का कार्य किया जा रहा है। लेकिन इसमें भी ठेकेदार को लाभ पहुंचाने के लिए विद्युत विभाग के कर्मचारी बिना कोई प्रेस नोट जारी करें और ना ही कोई सूचना दिए घंटो लाइन काटी जा रही है। जिससे रंन्नी क्षेत्र में आने वाले ग्रामीण अंचलों में 8 से 10-10 घंटे तक लाइन काटी जा रही है।

ग्रामीणों का कहना है कि, अगर इस तरह से लाइन काटी जा रही है, तो पहले सूचना देना चाहिए। बिना सूचना दिए ही इस तरह से लाइन काटी जा रही है और परेशानियों से हम जूझ रहे हैं। अगर प्रति माह की तारीख को हम बिल जमा नहीं करते हैं तो विद्युत विभाग के कर्मचारी बिल लेने के लिए घर तक पहुंच जाते हैं, लेकिन जब लाइट की जरूरत रहती है, तो हमें लाइट ही समय पर नहीं मिल पा रही है। ग्रामीणों का कहना है कि मेंटेनेंस करने के लिए भी एक तय सीमा होनी चाहिए। बताते है कि, रन्नी के अंतर्गत जो तार बिछाई का कार्य किया जा रहा है इसमें ठेकेदार को 2 दिन छोड़कर 8 से 10 घंटे तक लाइन विद्युत विभाग के स्थानीय कर्मचारियों द्वारा परमिट लेकर काटी जा रही है। जबकि इन दिनों गर्मी में इस तरह से लाइन काटने का प्रावधान नहीं है। अगर कहीं मेंटेनेंस करना है तो नियमों के मुताबिक आपको पहले सूचना जारी करना रहती है, तथा अख़बार के माध्यम से आम-जनता हेतु सूचना प्रसारण करने का प्रावधान भी है। लेकिन स्थानीय कनिष्ठ उपयंत्री की लापरवाही के कारण ग्रामीण अंचलों की आम जनता काफी परेशान हो रही।

टीईटी एग्जाम को निरस्त के लिए शिक्षक हुए एक जुट, सौंपा ज्ञापन

माही की गूंज, पेटलावद।

अध्यापक शिक्षक संयुक्त मोर्चा के प्रांतीय आह्वान पर पेटलावद विकास खंड के अध्यापक शिक्षक संयुक्त मोर्चा द्वारा स्थानीय डाक बंगला परिसर में एक विशाल बैठक का आयोजन किया गया। जिसमें तीन सूत्री मांगों को पूर्ण करने के लिए वक्ताओं ने सरकार का ध्यान आकर्षित किया। जिसमें पुरानी पेंशन का शीघ्र बहाल करे। टीईटी एग्जाम को निरस्त करे, प्रथम नियुक्ति दिनांक से वरिष्ठता ग्रज्युटी आदि विभिन्न मांगों को पूर्ण करें। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए वक्ताओं ने कहा कि जब शिक्षा का अधिकार नियम 2009, एक अप्रैल 2010 से लागू हुआ एवं एक सितंबर 2025 को माननीय सर्वोच्च न्यायालय दिए गए निर्णय के अनुसार एवं एनसीटीई ने 23 अगस्त 2010 को अधिसूचना जारी की जिसमें 2009 से पूर्व नियुक्त शिक्षकों को टीईटी परीक्षा उत्तीर्ण करना अनिवार्य है। शिक्षकों को ने अपने वक्तव्य में कहा कि जब डाक्टर , इंजीनियर,वकील , पुलिस ,आईएएस, आईपीएस को शासकीय सेवा के 20 से 25 वर्ष बाद क्रमशः एनईईटी, जेईई, एआईबीई परीक्षा नहीं ली जा रही है ,तो हमारे नियुक्ति 1998 में शासन के नियमानुसार और चयन परीक्षा से हुई थी आज हमें शासकीय सेवा में 20से 25 वर्ष बीत जाने के बाद टीईटी परीक्षा क्यों ली जा रही है,जो कि न्यायोचित नहीं है।कार्यक्रम के बाद स्थानीय डाक बंगला परिसर से नगर के मुख्य मार्ग होते हुए श्रद्धांजलि चौक तक हाथ में तख्तियां थाम कर , गगन भेदी नारों के साथ रैली निकाल कर ,तहसील कार्यालय पहुंच कर अनुविभागीय अधिकारी के माध्यम से माननीय प्रधानमंत्री जी ,माननीय मुख्यमंत्री जी मध्य प्रदेश शासन माननीय ,महामहिम राष्ट्रपति भारत के नाम ज्ञापन प्रस्तुत किया। ज्ञापन का वाचन श्री कैलाश वसुनिया ने किया,कार्यक्रम का संचालन अध्यापक शिक्षक संघ के पदाधिकारी श्री गोपाल काग ने संचालन किया एवं आभार आप नारी शक्ति श्रीमती गीता मंडलोई ने माना । प्रत्येक संकुल की शिक्षक, शिक्षिकाओं ने कार्यक्रम को सफल बनाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया।

दुर्घटना के बाद पुलिस को मिली डोडा चूरा जप्त करने में सफलता

माही की गूंज, काकनवानी।

कई महीनो से काकनवानी थाना क्षेत्र के आसपास एवं 8 वें पर इन दिनों जमकर दो नंबर के धंधे हो रहे हैं। आए दिन कहीं शराब, तो कहीं डोडा चूरा, तो कहीं अफीम, तो कहीं गांजा मध्य प्रदेश सीमा से गुजरात एवं राजस्थान निकाला जा रहा है।

अभी की ताजा घटना 10 अप्रैल की सुबह 5 बजे हुई जो की थांदला-लिंमड़ी मार्ग से होते हुए काकनवानी के समीप ग्राम गुमलीसाथ से मदरानी की ओर जीजे 18 बीपी 9930 फॉर्च्यूनर कार तेज गति से जा रही थी। जोकि, ग्राम मोरझरी मे हरिजन बस्ती के पास में टर्न होने की वजह से वहां अनियंत्रित होकर सीधा खेत में जा गिरी। घटना होते ही ड्राइवर वहां से फरार हो गया। जिस पर ग्राम वासियों ने पुलिस को सूचना कर बुलाया। पुलिस ने मौका मुआईना कर वाहन के साथ उसमें रखा 291 किलो डोडा चूरा जप्त कर थाने पर लाया गया एवं डोडा चूरा को बोरे में भरकर सिल किया गया। पुलिस कार्यवाही अनुसार उक्त वाहन के मालिक का पता अभी नहीं लग पाया है।

बताते हैं कि, उक्त वाहन में चार-पांच नंबर प्लेट अलग-अलग नंबर की और पाई गई थी। यह डोडा चूरा कहां से आ रहा था और कहां जा रहा था, उक्त वाहन किसका है अभी इसकी जानकारी नहीं मिली हैं, पुलिस जांच में जुटी हुई है।

कथा समाप्त होते ही भावुक हुए श्रद्धालु, महाप्रसादी के साथ समाप्त हुआ आयोजन

सात दिन की कथा में जो सबसे अच्छा आपके मन को लगा हो वो जीवन में ग्रहण करना - श्री सुगुणा बाईसा

माही की गूंज, बरवेट।

श्री संकट मोचन खेड़ापति हनुमान सरकार के पावन सानिध्य में चल रही भागवत सप्ताह के अंतिम दिवस कथा व्यास श्रीसुगुणा बाईसा ने कहा कि श्रीमदभागवत कथा कथा वास्तव में भक्त को भगवान से मिलना का माध्यम है। यह कथा मन को निर्मल कर अज्ञान को दूर करती है, जिससे हृदय में भक्ति जागृत होती है। सात दिनों की यह कथा न केवल मानसिक शांति और आध्यात्मिक विकास लाती है, बल्कि आत्मा को परमात्मा से जोड़कर निष्काम प्रेम का मार्ग भी दिखाती है। सुगना बाईसा ने कहा की भागवत कथा श्रमण करने से के आध्यात्मिक लाभ होता है। आत्मिक शुद्धि मिलती है। भागवत कथा नियमित रूप से सुनने से मन के विकार दूर होते हैं और मन पवित्र होता है। भागवत कथा ज्ञान व भक्ति का समन्वय है, यह कथा जीवन में सच्चाई, करुणा और धैर्य सिखाती है। भागवत कथा श्रमण करने से मोक्ष प्राप्त होता है। जैसे राजा परीक्षित ने भागवत कथा श्रमण कर मोक्ष प्राप्त किया उसी तरह यह कथा भक्तों को मृत्यु के भय से मुक्त कर मोक्ष का मार्ग प्रशस्त करती है। भागवत कथा के माध्यम से ही जीव अपनी आध्यात्मिक चेतना को जगाकर भगवान की शरण में जाता है।

नई बहु को घर के माहोल में ढलने का समय दे

व्यास पीठ से कहा कि, सास बहू के झगड़े होना आम बात हो गई है जिससे मां-बाप अपने बेटे-बहु से अलग रहने लगे है। साध्वी ने कहा कि, नयी बहू को, नए घर के माहौल और रिश्तों में ढलने के लिए पर्याप्त समय देना अत्यंत आवश्यक है। 20-22 साल की युवती से 50 साल के अनुभव जैसी समझदारी की उम्मीद न करें, बल्कि धैर्य और समझदारी से उनके साथ रिश्ते बनाएं। रिश्ता दबाव से नहीं, प्यार और सम्मान से चलता है इसलिए उन्हें अपनापन महसूस कराएं। नई बहु आई है तो उसे समझने और अपनापन दे। धैर्य रखें, नई जगह पर हर कोई जल्द नहीं ढल पाता। बहु को अपने हिसाब से घर के तौर-तरीकों को समझने का समय दें। उस पर तुरंत घर के सभी कामों की जिम्मेदारी या उम्मीदों का बोझ न डालें। बहु से खुलकर बात करें, उनकी पसंद-नापसंद को समझें और उन्हें अपनी बात रखने का मौका दें। बहू को 'पराया' ना महसूस होने दे बल्कि परिवार का अभिन्न हिस्सा मानकर सम्मान दें। क्योंकि एक नया रिश्ता प्यार और भरोसे से पनपता है। जब आप उन्हें समझने की कोशिश करेंगे, तो वे भी घर में घुल-मिल जाएंगी। भागवत कथा के अंतिम दिन कथा की वक्ता सुगुणा बाईसा ने भगवान श्रीकृष्ण-सुदामा मिलन प्रसंग का सुमधुर वर्णन किया। उन्होंने कहा कि, सुदामा जी भगवान श्रीकृष्ण के परम मित्र और भक्त थे। वह समस्त वेद पुरानों के ज्ञाता और विद्वान गरीब ब्राह्मण थे, लेकिन सुदामा ने कभी अपने मित्र द्वारकाधीश को अपनी गरीबी का एहसास नहीं होने दिया तथा कृष्ण-सुदामा का पुरा वर्णन बताया उक्त प्रसंग में सभी श्रद्धालु अश्रुपूरित हो गए। साध्वी ने 7 दिनों के दौरान भगवान के विभिन्न लीलाओं का भी वर्णन किया। भागवत कथा के अंतिम दिवस महाआरती के लाभार्थी रतनलाल पाटीदार परिवार ने लिया। इसके बाद प्रसादी में भंडारा भोज का आयोजन किया गया। इससे पहले मंदिर प्रांगण में यज्ञ का आयोजन भी हुआ जिसमे मुख्य यजमान बाबूलाल पांचाल, मांगीलाल पाटीदार, पन्नालाल पाटीदार, लालचंद पाटीदार, राधेश्याम पाटीदार परिवार ने लिया। इससे पहले कथा व्यास देवकन्या साध्वी श्री सुगुणा बाईसा का सम्मान आयोजन समिति के सदस्य रतनलाल पाटीदार, पूनमचंद पाटीदार, बाबूलाल पाटीदार, अशोक त्रिवेदी, सतीश पाटीदार, निलेश पाटीदार, पारस पाटीदार, बबलू पाटीदार जगदीश प्रजापत ने प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया। अभिनंदन पत्र का वाचन संजय लोढ़ा ने किया। भागवत कथा के दौरान एक मार्मिक प्रसंग सुनते हुए साध्वी ने कहा कि, माता-पिता के भगवान के घर चले जाने के बाद बहन के लिए घर के दरवाजे कभी बंद नही करना चाहिए। क्योंकि मां-बाप के बाद बहन को भाई से ही सबसे ज्यादा उम्मीद होती है, और उनका प्रेम व अपनापन भाई के लिए एक संजीवनी की तरह होता है।

संपादकीय

श्रमिक अशांति

कोरोना संकट के बाद पटरी पर लौटती वैश्विक अर्थव्यवस्थाओं को दुनिया के कई भागों में जारी युद्ध व संघर्ष ने फिर पटरी से उतार दिया है। महाशक्तियों की महत्वाकांक्षा मानवता और आम आदमी के जीवन पर भारी पड़ी है। यूक्रेन युद्ध ने दुनिया की अर्थव्यवस्थाओं और यूरोप की ऊर्जा आपूर्ति को बाधित जरूर किया, लेकिन उसका असर उतना व्यापक नहीं था, जितना खाड़ी युद्ध का रहा है। जाहिरा तौर पर वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला बाधित होने से आम आदमी के जीवन पर बहुत नकारात्मक असर पड़ा है। बढ़ती महंगाई ने आम आदमी की जीवन शैली व थाली पर गहरा प्रभाव डाला है। अमेरिका के साम्राज्यवादी मंसूबों और इस्राइल की आक्रामकता से उपजे खाड़ी संकट ने एशिया ही नहीं, बल्कि यूरोप, अफीका व अमेरिका की ऊर्जा आपूर्ति श्रृंखला को संकट में डाल दिया है। संयुक्त राष्ट्र की विफलता के चलते आज दुनिया में 'जिसकी लाठी, उसकी भैंस' वाली कहावत चरितार्थ हुई है। जिसका सीधा असर महंगाई वृद्धि के रूप में सामने आया है। एक ओर ईंधन संकट और उससे बुरी तरह प्रभावित जनजीवन आक्रोश का कारक बना है। विडंबना यह है कि इस महंगाई के बीच कामगारों के वेतन सिकुड़ने लगे हैं। जीवनयापन कठिन होते और कोई समाधान न निकलते देख श्रमिकों का आक्रोश सड़क तक पहुंचने लगा है। सोमवार को उत्तर प्रदेश के नोएडा में फैक्ट्रियों के श्रमिकों द्वारा किया गया हिंसक प्रदर्शन इस संकट की परिणति ही है। वहीं दूसरी ओर हरियाणा की औद्योगिक नगरी मानेसर में भी पुलिस व श्रमिकों के बीच हिंसक झड़पों की खबरें आई हैं। ये टकराव भारतीय औद्योगिक तंत्र की विसंगतियों की ही याद दिलाते हैं। इस तरह के हिंसक संघर्ष हमारी कानून-व्यवस्था की विफलता को भी उजागर करते हैं। वहीं बताते हैं कि श्रमिक वर्ग, उद्योग और राज्य सरकार के बीच कहीं न कहीं संवाद की कमी है। यही वजह है कि वेतन बढ़ाने की मांग के समर्थन में शुरू हुआ मार्च कालांतर आगजनी, तोड़फोड़ व यातायात बाधित करने में तब्दील हो गया।

निश्चित तौर पर समय रहते इस श्रमिक असंतोष को भांपते हुए बेहतर ढंग से संवाद किया जाता तो शायद टकराव की स्थिति पैदा न होती। दरअसल, सरकारों की तरफ से तो कहा जा रहा है कि देश में ईंधन व गैस आपूर्ति में कोई व्यवधान नहीं है, लेकिन जमाखोरी व प्रशासन की उदासीनता से इसकी कालाबाजारी जारी है। श्रमिक वर्ग जो छोटे गैस सिलेंडरों से जीवन-यापन करता था, उसमें व्यवधान पैदा हो गया। नियंत्रित गैस आपूर्ति से छोटे गैस सिलेंडर भरने का धंधा ठप हो गया। शायद सरकारों को भी इस बात का अहसास नहीं था कि कितना बड़ा श्रमिक वर्ग छोटे गैस सिलेंडरों को भरने के काले धंधे पर निर्भर है। यही वजह है कि हिमाचल समेत कई राज्यों में खाना पकाने के संकट के चलते श्रमिकों के घर लौटने के मामले प्रकाश में आए हैं। लेकिन इस संकट को शासन-प्रशासन के स्तर पर गंभीरता से नहीं लिया गया। निर्विवाद रूप से बढ़ती महंगाई और स्थिर वेतन के बीच बढ़ती खाई से अशांति की जड़ें गहरी होती जा रही हैं। औद्योगिक केंद्रों में कामगार पश्चिम एशिया युद्ध के चलते बढ़ी महंगाई के कारण दबाव में अपना गुजारा करने के लिये संघर्ष कर रहे हैं। निस्संदेह, हरियाणा द्वारा न्यूनतम मजदूरी बढ़ाने का निर्णय इस गंभीर वास्तविकता की स्वीकृति को ही दर्शाता है। लेकिन यह भी हकीकत है कि तात्कालिक उपाय के रूप में बातचीत और शिकायतों का फौरी निवारण कारगर विकल्प नहीं हो सकते। हालांकि, अधिकारी अशांति फैलाने में निहित स्वार्थी तत्वों की भूमिका की जांच कर रहे हैं, लेकिन ये घटनाएं व्यवस्थागत अविश्वास को भी दर्शाती हैं। दरअसल, श्रमिकों का उपेक्षित महसूस करना वातावरण को अस्थिर बनाता है। लेकिन यह एक हकीकत है कि दीर्घकालिक आर्थिक परिवर्तन के लिये विनिर्माण की महत्वाकांक्षाएं स्थिर-प्रेरित कार्यबल के बिना संभव नहीं हैं। औद्योगिक अशांति केवल उत्पादन-निवेश तक ही सीमित नहीं रहती। इससे आपूर्ति श्रृंखला बाधित होने और निवेशकों का भरोसा कम होने की आशंका भी पैदा होती है। निस्संदेह, आर्थिक प्रगति समावेशी हो। शासन को श्रमिक हितैषी होना चाहिए। विश्वास निर्माण से ही हमारे कारखाने विकास का इंजन बन सकते हैं।

युद्ध, बच्चे और हमारी सामुहिक विफलता

डॉ.ऋतु सारस्वत

हाल ही में नई दिल्ली स्थित ईरान दूतावास में 'एंजेल्स ऑफ मिनाब' नाम से एक प्रदर्शनी आयोजित की गई है, जिसमें उन छोटे बच्चों की बनाई तस्वीरों को प्रदर्शित किया गया है, जो ईरान के मिनाब शहर के एक स्कूल के मलबे से बरामद हुई थीं। ये चित्र उस त्रासदी के साक्ष्य हैं, जिसमें एक हमले के दौरान अनेक बच्चों और अन्य नागरिकों की जान चली गई। यह प्रदर्शनी केवल कलात्मक अभिव्यक्ति का मंच नहीं है, बल्कि उन बच्चों के मौन को दर्ज करने का माध्यम है, जो इस घटना के बाद बोलने के लिए जीवित नहीं रहे। इन चित्रों को देखने पर यह स्पष्ट होता है कि वयस्कों के राजनीतिक और सैन्य संघर्षों के बीच बच्चों का जीवन सबसे पहले और सबसे आसानी से नष्ट होता है। यह स्थिति किसी एक घटना तक सीमित नहीं है, बल्कि यह उस व्यापक व्यवस्था का संकेत है, जिसमें बच्चों का अस्तित्व और सुरक्षा लगातार उपेक्षित रहते हैं। यह केवल एक घटना का विवरण नहीं, बल्कि उस व्यापक वास्तविकता की ओर संकेत है, जिसे अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर किए गए आकलन भी रेखांकित करते हैं।

यूनिसेफ द्वारा जारी हालिया आकलन में, 'यूनिसेफ स्टैंड्स विद ईरान्स चिल्ड्रेन ऐज़ सीज़फायर ऑफर्स पाथ टू रिकवरी' के संदर्भ में यह स्पष्ट रूप से दर्ज किया गया है कि वर्ष 2026 के आरंभिक महीनों में ईरान में दर्ज सैन्य हमलों और उनसे उत्पन्न मानवीय परिस्थितियों के दौरान 1100 से अधिक बच्चे मारे गए या घायल हुए हैं, और इन घटनाओं के प्रभाव बच्चों के जीवन पर लंबे समय तक बने रहने की आशंका है। यूनिसेफ ने यह भी रेखांकित किया है कि इन परिस्थितियों का सबसे अधिक और सबसे गहरा असर बच्चों पर पड़ा है। वे न केवल शारीरिक क्षति का सामना कर रहे हैं, बल्कि भय, असुरक्षा और दीर्घकालिक मनोवैज्ञानिक आघात के साथ जीवन जीने के लिए विवश हैं। यूनिसेफ के अनुसार, जिन बच्चों का स्थान विद्यालयों और सुरक्षित पारिवारिक वातावरण में होना चाहिए था, वे आज विस्थापन, अस्थिरता और बुनियादी सुविधाओं के अभाव के बीच जीवन व्यतीत कर रहे हैं। अनेक बच्चों ने अपने परिजनों को खो दिया है और जो जीवित हैं, उनके लिए सामान्य जीवन की संभावना भी गंभीर रूप से बाधित हो चुकी है। यह स्थिति केवल एक मानवीय संकट नहीं, बल्कि उस वैश्विक व्यवस्था की गहरी विफलता को भी रेखांकित करती है, जो बच्चों की सुरक्षा के दावों के बावजूद उन्हें सबसे अधिक असुरक्षित छोड़ देती है। यह स्थिति केवल वर्तमान परिदृश्य का संकेत नहीं देती, बल्कि उस गहरी मानवीय त्रासदी की ओर भी इंगित करती है, जिसे सभ्य समाज ने अपनी आकांक्षाओं की आड़ में उपेक्षित कर दिया है। वर्ष 1956 में प्रकाशित पुस्तक 'नाइट' इस त्रासदी को समझने के लिए एक महत्वपूर्ण दस्तावेज के रूप में सामने आती है, जिसमें एली विज़ेल ने अपने जीवन के उन अनुभवों को दर्ज किया है, जिन्हें उन्होंने मात्र 15 वर्ष की आयु में स्वयं जिया। ट्रांसिल्वेनिया के सिघेट शहर में जन्मे इस बालक को 1944 में उसके परिवार सहित उसके निवास-स्थान से हटाकर ऑशविट्ज और बाद में बुचेनवाल्ड जैसे यातना शिविरों में भेज दिया गया। यह कृति केवल एक व्यक्ति की स्मृतियों का संकलन नहीं है, बल्कि उस व्यापक मानवीय संकट का प्रमाण है, जिसमें एक बालक का बचपन, विश्वास और जीवन-बोध एक साथ विखंडित हो जाते हैं।

विज़ेल लिखते हैं कि 'मैं उन लपटों को कभी नहीं भूल सकता, जिन्होंने मेरे विश्वास को सदा के लिए समाप्त कर दिया; मैं उस सन्नाटे को कभी नहीं भूल सकता, जिसने मुझसे जीवन की इच्छा छीन ली; और मैं उन क्षणों को कभी नहीं भूल सकता, जिन्होंने मेरी आत्मा को नष्ट कर मेरे सपनों को राख में बदल दिया।' यह कथन केवल एक बालक की व्यक्तिगत स्मृति नहीं है, बल्कि उन असंख्य बच्चों की सामूहिक पीड़ा का प्रतिनिधित्व करता है, जो युद्ध और हिंसा के बीच अपने अस्तित्व से पहले ही वंचित हो जाते हैं।

युद्ध की त्रासदी का एक अन्य आयाम उस समय सामने आता है, जब हम 'ए डायरी ऑफ अ यंग गर्ल' को देखते हैं, जिसे ऐन फ्रैंक ने 1942 से 1944 के बीच, लगभग दो वर्षों तक, उस अवधि में लिखा जब वह अपने परिवार के साथ नाज़ी उत्पीड़न से बचने के लिए एक बंद स्थान में छिपकर रहने के लिए विवश थी। लगभग 13 से 15 वर्ष की आयु के बीच लिखी गई यह डायरी एक ऐसी बालिका के जीवन का सजीव दस्तावेज है, जो निरंतर भय, असुरक्षा और सीमित परिस्थितियों के बीच भी अपने सामान्य जीवन और सपनों को बनाए रखने का प्रयास कर रही थी। ऐन फ्रैंक की मृत्यु के उपरांत यह डायरी 1947 में प्रकाशित हुई, और यह केवल एक बालिका की स्मृतियों का संकलन भर नहीं है, बल्कि उन असंख्य बच्चों के जीवन की प्रतिनिधि कथा है, जिन्हें युद्ध ने असमय ही समाप्त कर दिया।

इसी डायरी में वह लिखती है, 'आई वांट टू गो ऑन लिविंग इवन आफ्टर माई डेथ' (मैं अपनी मृत्यु के बाद भी जीवित रहना चाहती हूं) यह केवल एक बालिका की साधारण अभिलाषा नहीं है, बल्कि उन असंख्य अधूरे जीवनों की प्रतिध्वनि है, जिन्हें युद्ध ने पूर्ण होने का अवसर ही नहीं दिया। यह पंक्ति इस तथ्य को अत्यंत स्पष्टता से सामने लाती है कि युद्ध बच्चों से केवल उनका वर्तमान ही नहीं छीनता, बल्कि उनके भविष्य की संभावनाओं को भी जन्म लेने से पहले ही समाप्त कर देता है।

संयुक्त राष्ट्र और यूनिसेफ द्वारा 2023 में जारी रिपोर्ट 'मोअर दैन 300,000 ग्रेव वायलेशन्स अगेंस्ट चिल्ड्रेन इन कॉन्फ्लिक्ट वेरिफाइड वर्ल्डवाइड ओवर द पास्ट 18 इयर्स' के अनुसार, 2005 से 2023 के बीच कम से कम 1,20,000 बच्चे युद्ध में मारे गए या गंभीर रूप से घायल हुए हैंकृ अर्थात? औसतन हर दिन लगभग 20 बच्चे। इसके साथ ही, यूनिसेफ द्वारा 2024 में जारी आकलन 'नॉट अ न्यू नॉर्मल= 2024 इज़ वन ऑफ द वर्स्ट इयर्स फॉर चिल्ड्रेन इन कॉनफ्लिक्ट' यह संकेत करता है कि यह स्थिति सुधरने के बजाय और अधिक गंभीर होती जा रही है।

ये आंकड़े केवल संख्याएं नहीं हैं, बल्कि उन जीवनों का मौन साक्ष्य हैं, जिन्हें अपना जीवन जीने का अवसर ही नहीं दिया गया। यह स्थिति केवल विफल नीतियों का परिणाम नहीं है, बल्कि उन सामूहिक संघर्षों और आकांक्षाओं का भी प्रतिबिंब है, जिनके बीच बच्चों का जीवन बार-बार उपेक्षित होता है। जब युद्ध और सत्ता के प्रश्न प्रमुख हो जाते हैं, तब बच्चों की सुरक्षा और उनका अस्तित्व स्वाभाविक रूप से हाशिये पर चला जाता है। यह प्रवृत्ति इस बात की ओर संकेत करती है कि हमारी प्राथमिकताओं का निर्धारण ही कहीं न कहीं त्रुटिपूर्ण है, जहां भविष्य का प्रतिनिधित्व करने वाले बच्चों को वर्तमान की जटिलताओं के बीच अनदेखा कर दिया जाता है। अंततः प्रश्न यह नहीं है कि युद्ध कहां और क्यों हो रहे हैं, बल्कि यह है कि उन बच्चों के प्रति हमारी जिम्मेदारी क्या है, जिन्हें हम स्वयं इस संसार में लाते हैं; और जब हम उनके जीवन और सुरक्षा की रक्षा नहीं कर पाते, तब सभ्य समाज होने का हमारा दावा स्वतः ही कठघरे में खड़ा हो जाता है।

लोकतंत्र में महिलाओं को उचित हक दिलाने की पहल

ओम प्रकाश धनकर

नारी वंदन क़ानून में सुधार एक उत्सव बन गया है। आगामी 16, 17, 18 अप्रैल की तिथियां भारतीय इतिहास में गौरवमयी स्वर्णिम अक्षरों में अंकित होने जा रही हैं। साल 2026 का बैसाखी का त्योहार एक नव पर्व के रूप में पल्लवित हो रहा है। ऐसा लग रहा था विधायिका में महिला सहभागिता का अवसर 2034 के चुनाव के साथ अवतरित होगा। लेकिन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी की समसामयिक पहल से यह अवसर 2029 में साकार हो रहा है।

आगामी मंजिल पांच साल पहले आ रही है। चाव से भरी हुई देश की नारी शक्ति को बधाई! पंजाबी में एक फिल्म हैकृगोडे गोडे चाव। इस फिल्म की केंद्रीय कथा महिलाओं के पहली बार बारात चढ़ने की है। बारात में जाने में जब वे सफल होती हैं तब जिस चाव से उनके कदम उठ रहे हैं, उसे कथाकार ने 'गोडे गोडे चाव' कहा है। भारत की समस्त दल-नेत्रियों समेत जागरूक महिलाओं, महिला संगठनों व युवतियों में इस अधिनियम में सुधार तुरंत आने से वैसा ही गोडे गोडे चाव है। यानी यह चाव महिला जगत के सम्पूर्ण वातावरण में देखा जा रहा है।

महिलाओं ने हर अधिकार वर्षों के संघर्ष से पाया है। जीवन हो, पोषण हो, शिक्षा हो, सम्पत्ति में हिस्सेदारी, मताधिकार, विभिन्न नौकरियों में सहभागिता-शताब्दियों की तपस्या, संघर्ष व धैर्य से अर्जित किए। दुनिया के विभिन्न देशों, समाजों व समुदायों की अलग-अलग धाराओं में आज भी महिलाएं काफी पीछे हैं। अनेक अधिकारों से वंचित व पीड़ाओं में भी हैं। वर्षों तक मां की कोख ही कब्र बनती रही हैं। मेरे एक मित्र हैं विद्यार्थी परिषद में, 1990 के दशक में साथ काम करते थे, उन्होंने उस समय मुझे बताया उनकी भतीजी पहली बेटी है जो उनके गांव में ज़िंदा रखी गई है। मेरे लिये ये सुनना आंखें खोलने वाला था। हमारे भारत के ही एक हिस्से में ये स्थिति रही है। मैं चार बहनों, तीन बुवाओं और चार मौसियों के मध्य बड़ा हुआ था। लेकिन एक दशक पहले आधुनिक तकनीकों व पुत्र मोह की सोच से जब मां की कोख ही बेटियों के लिए कब्र बन रही थी तब हमारे बुरी तरह बिगड़े लिंगानुपात के कारण बेटियों के लिए करुणामय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने हरियाणा में पानीपत की भूमि पर आकर- 'हम बेटियों को बचायें'-इसके लिए झोली फैलाई थी।

इस करुण कथा के समानांतर भारतीय महिलाएं अपने परिश्रम से हर जगह खुद को साबित भी कर रही थीं। अंतरिक्ष में, सेना में, खेलों में, विज्ञान में, उद्यमिता में, प्रशासन मे, हर क्षेत्र में उन्होंने अपनी क्षमता प्रदर्शित की। विज्ञान, प्रौद्योगिकी व सशस्त्र बलों तक खुद को बेहतर साबित किया। विधायिका में उनकी सहभागिता अभी हाशिये पर है। वर्तमान आंकड़ों पर दृष्टिपात करें तो विधानसभाओं में महिलाओं की संख्या 9 प्रतिशत से भी कम है। जबकि 543 सदस्यों वाली लोकसभा में महिला सांसदों की संख्या मात्र 14 प्रतिशत से कम है। वैश्विक स्तर पर भारत इस मामले में 140 से अधिक देशों से पीछे है।

अब समय को भारतीय नेतृत्व ने पहचान लिया है कि राजनीति में भी नारी शक्ति को उसका उचित स्थान दें। सच्चा, समावेशी और सशक्त लोकतंत्र बिना महिलाओं की समान भागीदारी के अधूरा ही रहता है। महिलाएं शिक्षा, स्वास्थ्य, पोषण, बाल विकास व महिला सुरक्षा जैसे मुद्दों पर गहरी समझ रखती हैं। जब वे खुद सांसद या विधायक बनती हैं तो नीतियां कागजी नहीं, बल्कि जमीन पर उतरती हैं। पंचायतों में जहां महिलाएं सत्ता में आईं, वहां बाल विवाह घटा, लड़कियों की शिक्षा बढ़ी और घरेलू हिंसा पर अंकुश लगा। अब यही प्रभाव पूरे देश स्तर पर दिखेगा।

विश्व आर्थिक मंच की रिपोर्ट बताती है कि लैंगिक समानता से जीडीपी में 27 प्रतिशत की बढ़ोतरी हो सकती है। यह बिल आर्थिक विकास का इंजन बनेगा। साल 2047 में विकसित भारत के स्वप्न को भी साकार करेगा। नारी वंदन का यह फैसला केवल राजनीतिक समीकरण नहीं बदल रहा, बल्कि पूरे समाज की सोच बदल रहा है। चुनावी मैदान में महिला उम्मीदवारों की तलाश बढ़ेगी, पार्टियां उन्हें टिकट देंगी, परिवार समर्थन करेंगे और समाज सम्मान देगा। एक दिन हम गर्व से कह सकेंगेदृ'भारत वह देश है जहां बेटियां न केवल घर संभालती हैं, बल्कि संसद और विधानसभाएं भी संभालती हैं।'

नारी शक्ति वंदन क़ानून केवल एक अधिनियम नहीं, भारतीय समाज की उस सामूहिक चेतना का परिचायक है जो अब स्त्री-पुरुष के मध्य समानता को केवल आदर्श नहीं, वास्तविकता बनाना चाहती है। यह उस भारत की परिकल्पना है जहां माता-बहनें-बेटियां केवल घर की नहीं, राष्ट्र की भी नियति लिखेंगी। नारी शक्ति वंदन की पहल भारत की सबसे बड़ी सामाजिक न्याय की विजय है। यह बिल कह रहा हैदृअब इंतजार नहीं, अब हिस्सेदारी। अब महिलाएं पीछे नहीं, बल्कि आगे, बराबरी पर और नेतृत्व में होंगी।

हर भारतीय नागरिक, हर राजनीतिक दल और हर युवा को इस बिल का स्वागत करना चाहिए। क्योंकि जब नारी सशक्त होगी, तब भारत सशक्त होगा। आओ भारत की बेटियो-संसद की सीढ़ियां अब तुम्हारा भी इंतजार कर रही हैं।

जंगलों की कम होती ग्लोबल वार्मिंग से लड़ने की क्षमता

मुकुल व्यास

दुनिया के जंगल हमारे पारिस्थितिक तंत्र का आधार हैं और ग्लोबल वार्मिंग से लड़कर पर्यावरण का संतुलन बनाए रखने में अहम भूमिका निभाते हैं। लेकिन अब उनकी विशिष्ट भूमिका कमजोर हो रही है क्योंकि जंगलों में तेजी से बढ़ने वाले पेड़ों की भरमार हो रही है और लंबे समय तक जीने वाली प्रजातियां तेजी से गायब हो रही हैं। स्थिर और लंबे जीवनकाल वाले पेड़ों की जगह तेजी से बढ़ने वाले पेड़ों को रखना टिम्बर इंडस्ट्री और जंगल की आग के बाद जल्दी संभलने के लिए फायदेमंद है लेकिन बदलते मौसम का सामना करते समय यह जंगलों को बहुत ज्यादा खतरे में डालता है।

डेनमार्क की ओरहुस यूनिवर्सिटी के वैज्ञानिकों ने 31,001 पेड़ों की प्रजातियों का वैश्विक विश्लेषण करके बताया है कि तेजी से बढ़ने वाले पेड़ किन जंगलों में हावी हो रहे हैं। डेनिश वैज्ञानिक जेन्स-क्रिश्चियन स्वेनिंग ने नक्शों का इस्तेमाल करके दिखाया कि धीरे-धीरे बढ़ने वाले, खास किस्म के पेड़ तेजी से बढ़ने वाली प्रजातियों के आगे हार रहे हैं। स्वेनिंग ने उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय इलाकों में ऐसे कई छोटे पेड़ों का उल्लेख किया है जिनके गायब होने की संभावना सबसे ज्यादा है। एक बार जब तेजी से बढ़ने वाले पेड़ किसी जगह पर हावी हो जाते हैं, तो तूफान, सूखा और कीड़े उस जंगल के बड़े हिस्से को एक साथ गिरा सकते हैं।

दरअसल, लकड़ी काटने, सड़क बनाने और आग लगने से खुली धूप वाली जगहें बन जाती हैं, जहां तेजी से बढ़ने वाले पेड़ बहुत जल्दी फैल जाते हैं। हल्की पत्तियों और मुलायम लकड़ी की वजह से ये पेड़ तेजी से बढ़ते हैं। सूखे या गर्मी की वजह से पानी की कमी होने पर भी ऐसे पेड़ों का बढ़ना जारी रहता है। इन पेड़ों में लकड़ी का घनत्व कम होता है, जिसकी वजह से इनके तने आसानी से टूट जाते हैं और जल्दी सूख जाते हैं। विषम परिस्थितियों में हल्की लकड़ी वाले पेड़ों के मरने की संभावना अधिक होती है। लंबे समय तक चलने वाले पेड़ धीरे-धीरे बढ़ते थे। मौसम खराब होने पर उनकी गहरी जड़ें और मजबूत तने जंगल को एक साथ बनाए रखते थे। घनी लकड़ी और मजबूत पत्तियों ने उन्हें सूखे और कीड़ों से बचने में मदद की।

हाल ही में आई एक रिपोर्ट ने ऐसे पेड़ों के टिकाऊपन को जलवायु सुरक्षा से जोड़ा है। इस तरह के पेड़ जंगल के पारिस्थितिकी तंत्र की रीढ़ हैं और स्थिरता और कार्बन भंडारण में योगदान देते हैं। जैसे-जैसे तूफान, कटाई और गर्मी से जंगलों पर दबाव बढ़ता है, पेड़ों की बाहरी प्रजातियां रोशनी, पानी और पोषक तत्वों के लिए मूल पौधों को घेर लेती हैं। यह दबाव दुर्लभ स्थानीय पेड़ों को खत्म होने के करीब ला सकता है। उष्णकटिबंधीय जंगलों में कई पेड़ों की प्रजातियां छोटे-छोटे इलाकों में मिलती हैं, इसलिए कुछ पेड़ों के खत्म होने से पूरा खाद्य चक्र तेजी से कम हो सकता है।

जंगल कार्बन सिंक का काम करते हैं, वे जितना कार्बन छोड़ते हैं उससे कहीं ज्यादा मात्रा में उसे हटाते हैं। धीरे-धीरे बढ़ने वाले घने पेड़ों ने दशकों तक तनों में कार्बन को बंद रखा, क्योंकि ठोस लकड़ी के हर इंच में ज्यादा पदार्थ समा सकता है। तेजी से बढ़ने वाले पेड़ अक्सर कम उम्र में मर जाते हैं। उनके तने हल्के होते हैं, इसलिए उनमें जमा कार्बन तूफान और क्षय से जल्दी हवा में वापस चला जाता है। इससे जंगल लंबे समय तक कार्बन जमा करने में कम असरदार हो जाते हैं। सही पेड़ों के बिना जंगल उन पक्षियों और स्तनपायी जीवों को खो सकते हैं जो बीज फैलाते हैं, जिससे तूफान या आग के बाद जंगल में रिकवरी धीमी हो जाती है। जंगल के प्रबंधक अक्सर जल्दी फसल के लिए तेजी से बढ़ने वाले पेड़ों को पसंद करते हैं, लेकिन जब पौधों में धीमी गति से बढ़ने वाली प्रजातियां भी शामिल होती हैं, तो जंगल लंबे समय तक अपनी मजबूती बनाए रख सकते हैं। ज्यादा पेड़ चुनने से दुर्लभ आनुवांशिकी सुरक्षित रहती है और जब मौसम का तनाव बढ़ता है, यह जंगल में पुराने विकास वाले गुणों को बनाए रखती है।

एक अन्य अध्ययन में वैज्ञानिकों ने जंगलों की एक और भूमिका को उजागर किया है। अध्ययन में पाया गया कि वन की मिट्टी जलवायु परिवर्तन में जितना योगदान दे रही है, उसका हमें अंदाजा नहीं है। यह साल दर साल चुपचाप हवा से मीथेन को अवशोषित करती रहती है। दक्षिण-पश्चिम जर्मनी में लिए गए नए दीर्घकालिक मापों से पता चलता है कि कुछ वनों में यह भूमिगत मीथेन अवशोषण क्षमता कम होने के बजाय लगातार मजबूत होती जा रही है।

जर्मनी के गोटिंगेन विश्वविद्यालय के शोधकर्ताओं ने लगभग 25 वर्षों तक 13 वन भूखंडों में मीथेन के मूवमेंट का अध्ययन किया और पाया कि मिट्टी की मीथेन अवशोषण क्षमता में प्रति वर्ष लगभग 3 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। यह निरंतर वृद्धि नम और शुष्क दोनों मौसमों और धीरे-धीरे बढ़ते तापमान के दौरान देखी गई। यह वृद्धि इस धारणा को चुनौती देती है कि जलवायु परिवर्तन से मिट्टी की मीथेन अवशोषण क्षमता में एक समान कमी आएगी।

नया अध्ययन इस बारे में भी नए सवाल खड़े करता है कि कुछ वन दूसरों की तुलना में तेजी से क्यों बेहतर हो रहे हैं। वनों के सूक्ष्मजीव मीथेन को अवशोषित करते हैं। कम वर्षा के कारण मिट्टी में वायु के लिए अधिक स्थान बचता है, जिससे मीथेन सतह के पास रहने के बजाय तेजी से नीचे की ओर जा सकती है। शुष्क मिट्टी में हवा से भरे छिद्र अधिक होते हैं जिससे मीथेन और ऑक्सीजन दोनों मिट्टी में आसानी से प्रवाहित हो जाते हैं। यह एक महत्वपूर्ण कारक है क्योंकि मीथेन का उपभोग करने वाले सूक्ष्मजीवों को कार्य करने के लिए ऑक्सीजन की आवश्यकता होती है।

जांचे गए भूखंडों में शोधकर्ताओं ने मीथेन के अधिक अवशोषण को मिट्टी की कम नमी और धीरे-धीरे बढ़ने वाले मिट्टी के तापमान से जोड़ा। मीथेनोट्रोफ्स नामक सूक्ष्मजीव मीथेन का ईंधन के रूप में उपयोग करते हैं। एक बार जब मीथेन ऊपरी मिट्टी तक पहुंच जाती है तो ये जीव विभिन्न प्रतिक्रियाओं के जरिए उसे कार्बन डाइऑक्साइड और पानी के रूप में विखंडित कर देते हैं। शोधकर्ताओं ने पाया कि अत्यधिक शुष्क परिस्थितियां सूक्ष्मजीवों की गतिविधि को दबा सकती हैं, जबकि लंबे समय तक गीली मिट्टी ऑक्सीजन के स्तर को कम कर देती है और मीथेन उत्पादक सूक्ष्मजीवों को हावी होने का अवसर देती है।

नासा के अनुसार मीथेन कार्बन डाइऑक्साइड की तुलना में अधिक ऊष्मा अवशोषित करती है, लेकिन यह केवल 7 से 12 वर्षों तक ही बनी रहती है। जब मिट्टी मीथेन को अवशोषित करती है, तो यह वायुमंडल में पहुंचने वाली मीथेन की मात्रा को कम कर देती है, जिससे आने वाले वर्षों में ग्लोबल वार्मिंग का दबाव कम हो जाता है। वन की मिट्टी को इस सेवा के लिए अक्सर श्रेय नहीं दिया जाता। अधिक मीथेन अवशोषण से समस्या का समाधान अपने आप नहीं हो जाएगा, लेकिन इससे उत्सर्जन में कटौती होने तक कुछ समय मिल सकता है।

पत्नी ने प्रेमी के साथ मिकर पति की हत्या की खौफनाक साजिश

माही की गूंज, मंदसौर।

प्रदेश में रिश्तों के कत्ल की बढ़ती घटनाओं ने मानवता को झकझोर दिया है। मंदसौर से आई एक चौंकाने वाली खबर में, एक पत्नी ने अपने प्रेमी के साथ मिलकर अपने पति की हत्या की। यह साजिश इतनी भयावह थी कि पुलिस भी हैरान रह गई। पत्नी ने अपने पति को रास्ते से हटाने के लिए एक खौफनाक योजना बनाई, जिसमें उसने अपने पति की हत्या के बाद शव को जलाने और टुकड़ों में काटकर खेत में दफनाने का काम किया।

यह घटना भानपुरा थाना क्षेत्र के दुधाखेड़ी गांव की है। मृतक की पहचान धनराज नाथ के रूप में हुई है। जानकारी के अनुसार, धनराज की पत्नी धापूबाई का गांव के पंकज चौधरी के साथ लंबे समय से प्रेम संबंध था। जब धनराज को इस रिश्ते का पता चला, तो घर में विवाद बढ़ने लगे। प्रेमी के प्रति अंधी हो चुकी पत्नी ने अपने पति को खत्म करने का निर्णय लिया और 10 अप्रैल की रात को इस जघन्य अपराध को अंजाम दिया।

खेत में दफनाया गया पति का शव

धनराज पर सब्बल और तलवार से ताबड़तोड़ हमले किए गए। आरोपियों ने तब तक वार किए जब तक धनराज की सांसें थम नहीं गईं। हत्या के बाद, सबूत मिटाने के लिए शव के कई टुकड़े किए गए और उसे जलाने की कोशिश की गई। अंत में, जेसीबी मशीन बुलाकर खेत में गहरा गड्ढा खुदवाया गया और शव के अवशेषों को वहां दफन कर दिया गया।

मृतक के बच्चों ने मां की करतूत का किया खुलासा

इस जघन्य हत्या का पर्दाफाश किसी थ्रिलर फिल्म से कम नहीं था। पति के लापता होने के बाद, पत्नी धापूबाई ने खुद थाने जाकर गुमशुदगी की रिपोर्ट दर्ज कराई। लेकिन मृतक के बच्चों को अपनी मां और पंकज पर संदेह था। उन्होंने पुलिस को बताया कि उनके पिता को आखिरी बार पंकज के साथ देखा गया था। पुलिस ने तकनीकी साक्ष्य और सीसीटीवी फुटेज की जांच की, जिससे मामले की कड़ियां जुड़ने लगीं।

पुलिस की पूछताछ में प्रेमी ने उगला सच

पुलिस ने संदिग्ध पंकज को हिरासत में लेकर सख्ती से पूछताछ की, जिसमें उसने सारा सच उगल दिया। पुलिस ने खेत की खुदाई कर शव के अवशेष बरामद किए। जैसे ही इस बर्बरता की खबर गांव में फैली, तनाव फैल गया। ग्रामीणों ने गरोठ-भानपुरा रोड पर चक्का जाम कर दिया और आरोपियों को फांसी की सजा देने की मांग की।

एसपी ने दी जानकारी

मंदसौर के एसपी विनोद मीना ने बताया कि शुरुआत में पत्नी ने खुद आकर गुमशुदगी की रिपोर्ट दर्ज कराई थी। सीसीटीवी और तकनीकी साक्ष्यों के आधार पर जब संदेह हुआ, तो प्रेमी को हिरासत में लिया गया। पूछताछ में खुलासा हुआ कि गला घोंटकर हत्या की गई थी। साक्ष्य छुपाने के लिए शव को जलाकर मिट्टी में दबाया गया। पुलिस ने हत्या की धाराओं में मामला दर्ज कर मृतक की पत्नी और प्रेमी दोनों को हिरासत में ले लिया है।

प्याज के नीचे छिपाकर ले जा रहे थे डोडाचूरा

माही की गूंज, मंदसौर।

जिले की नाहरगढ़ थाना पुलिस ने मादक पदार्थ तस्करी के खिलाफ बड़ी कार्रवाई करते हुए एक क्विंटल से अधिक डोडाचूरा जब्त किया है। तस्कर इसे बिना नंबर की बोलेरो में प्याज के नीचे छिपाकर राजस्थान ले जा रहे थे। पुलिस ने वाहन सहित करीब 10 लाख रुपए का माल जब्त किया है।

नशा मुक्ति अभियान के तहत थाना प्रभारी निरीक्षक वरुण तिवारी के नेतृत्व में पुलिस टीम को सोमवार रात मुखबिर से सूचना मिली थी कि खेडा क्षेत्र से तस्कर बोलेरो में डोडाचूरा भरकर बिल्लोद-नाहरगढ़ मार्ग से राजस्थान जाने वाले हैं। सूचना के आधार पर पुलिस ने पुलिया के पास नाकाबंदी कर संदिग्ध वाहन को रोका।

तलाशी के दौरान वाहन में ऊपर प्याज भरे मिले। शक होने पर जब पुलिस ने प्याज हटवाए, तो नीचे चार ट्रॉली बैग बरामद हुए, जिनमें डोडाचूरा भरा हुआ था। तौल करने पर इसका वजन करीब 1 क्विंटल 4 किलो पाया गया।

पुलिस ने मौके से चार आरोपियों-किशोर राव भाट (मंदसौर), सोनू सेन (गंगानगर), ताराचंद मेघवाल और हरिकिशन नायक (दोनों अनूपगढ़, राजस्थान)-को गिरफ्तार किया है। वहीं सप्लायर और मुख्य सरगना फरार हैं, जिनकी तलाश जारी है।

जांच में वाहन से तीन फर्जी नंबर प्लेटें भी बरामद हुई हैं। पुलिस के अनुसार आरोपी हर बार नंबर प्लेट और रूट बदलकर तस्करी करते थे, ताकि पकड़े न जा सकें। प्रारंभिक पूछताछ में सामने आया है कि आरोपी इससे पहले सात बार तस्करी कर चुके थे और यह उनकी आठवीं खेप थी।

आरोपियों ने बताया कि डोडाचूरा काल्याखेड़ी निवासी श्रवण सिंह से खरीदा गया था, जिसे जयपुर-झुंझुनूं पहुंचाने की योजना थी। पुलिस ने मामला दर्ज कर आगे की जांच शुरू कर दी है।

भारत जिस मुकाम पर खड़ा है उसमें डॉ. अंबेडकर का महत्वपूर्ण योगदान- सांसद गुप्ता

माही की गूंज, मंदसौर।

जिले में भारत रत्न डॉ. भीमराव अंबेडकर की जयंती के अवसर पर जिला स्तरीय कार्यक्रम कुशाभाऊ ठाकरे आडिटोरियम में संपन्न हुआ। इस अवसर पर सांसद सुधीर गुप्ता ने कहा कि डॉ. भीमराव अंबेडकर ने भारत के संविधान को एक सशक्त, व्यवस्थित एवं समावेशी स्वरूप प्रदान किया। उन्होंने समाज के हर वर्ग को समान अधिकार दिलाने की दिशा में ऐतिहासिक कार्य किया। आज भारत जिस शक्ति और प्रतिष्ठा के साथ विश्व पटल पर खड़ा है, उसमें डॉ. अंबेडकर का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने समानता, न्याय और विकास की जो भावना संविधान में निहित की, उसी के अनुरूप देश निरंतर आगे बढ़ रहा है।

कार्यक्रम का शुभारंभ डॉ. अंबेडकर की प्रतिमा पर दीप प्रज्वलन एवं माल्यार्पण के साथ किया गया। कार्यक्रम में जिला पंचायत अध्यक्ष दुर्गा विजय पाटीदार, पूर्व विधायक यशपाल सिंह सिसोदिया, नगर पालिका अध्यक्ष रमादेवी गुर्जर सहित कलेक्टर अदिती गर्ग, पुलिस अधीक्षक विनोद कुमार मीना एवं अन्य प्रशासनिक अधिकारी, जनप्रतिनिधि, पत्रकार तथा बड़ी संख्या में नागरिक उपस्थित रहे।

कार्यक्रम के अंत में अतिथियों द्वारा आदिम जाति कल्याण विभाग की विभिन्न योजनाओं के अंतर्गत अंतरजातीय विवाह प्रोत्साहन योजना के हितग्राहियों को प्रशस्ति पत्र एवं दो-दो लाख रुपये की प्रोत्साहन राशि प्रदान की गई। साथ ही अन्य योजनाओं के हितग्राहियों को भी मंच से सम्मानित किया गया।

जंगलों में मिला ऑस्ट्रेलियाई युवक, 'राधे-राधे' का कर रहा जाप

माही की गूंज, रतलाम।

जिले के नामली थाना क्षेत्र अंतर्गत उस समय सनसनी फैल गई, जब बांगरोद और जड़वासा के बीच स्थित जंगल में एक विदेशी युवक लावारिस हालत में मिला। घने अंधेरे में पेड़ के नीचे अकेले बैठे इस युवक को देख ग्रामीणों ने तुरंत पुलिस को सूचना दी। युवक खुद को ऑस्ट्रेलिया का निवासी बता रहा है और लगातार 'राधे-राधे' का जाप कर रहा है।

रात करीब 11 बजे ग्रामीणों ने बांगरोद रेलवे स्टेशन से लगभग आधा किलोमीटर दूर जंगल की ओर एक विदेशी युवक को पेड़ के नीचे बैठा देखा। सुनसान इलाके में विदेशी को देख मौके पर भीड़ जमा हो गई। सूचना मिलते ही बांगरोद पुलिस चौकी प्रभारी प्रदीप शर्मा दल-बल के साथ मौके पर पहुँचे और युवक को सुरक्षित नामली थाने लेकर आए।

पास मिला वीजा, पर नाम बताने में असमर्थ

पुलिस सूत्रों के मुताबिक, युवक की उम्र करीब 42 वर्ष है। शुरुआती पूछताछ में उसने खुद को ऑस्ट्रेलिया का निवासी बताया है। पुलिस को उसके पास से वीजा बरामद हुआ है, जिससे उसके विदेशी होने की पुष्टि तो हो गई है, लेकिन वह अपना नाम स्पष्ट रूप से नहीं बता पा रहा है।

अजीब व्यवहार: ट्रॉली बैग को लेकर सतर्क

थाने लाए जाने के बाद युवक का व्यवहार काफी चर्चा में है। वह अपने साथ रखे ट्रॉली बैग को लेकर अत्यधिक संवेदनशील है और किसी भी पुलिसकर्मी या अन्य व्यक्ति को उसे छूने नहीं दे रहा है। वह बार-बार 'राधे-राधे' बोल रहा है, जिससे उसके किसी धार्मिक यात्रा पर होने या मानसिक तनाव में होने की संभावना जताई जा रही है।

कैसे पहुँचा जंगल, गहराया रहस्य

युवक इस सुनसान इलाके तक कैसे पहुँचा, इसे लेकर दो तरह की संभावनाएँ जताई जा रही हैं। चूंकि घटना स्थल बांगरोद स्टेशन के पास है, माना जा रहा है कि वह किसी ट्रेन से उतरा होगा। स्थानीय चर्चाओं के अनुसार, युवक किसी ऑटो से यहाँ पहुँचा था और चालक उसे बीच रास्ते में ही उतार कर चला गया।

इनका कहना है-

विदेशी युवक मानसिक रूप से विक्षिप्त लग रहा था। ?÷युवक को सुरक्षित थाने लाया गया। उसके पास वीजा मिला है, जिससे विदेशी नागरिक होने की पुष्टि हुई है। वह फिलहाल अपना नाम स्पष्ट नहीं कर पा रहा है। युवक के पास दिल्ली का टिकट मिला है। मामले की जाँच के बाद युवक को रेल्वे स्टेशन छोड़ दिया है।

खेती में बायो कल्चर को विकसित करें- कलेक्टर श्रीमती गर्ग

माही की गूंज, मंदसौर।

कलेक्टर श्रीमती अदिति गर्ग ने ग्राम कटक्या में किसान राजकुमार पोरस द्वारा की जा रही अमरूद की प्राकृतिक खेती का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने खेत में अपनाई जा रही प्राकृतिक कृषि पद्धतियों की सराहना की और बायो कल्चर के विकास पर विशेष जोर दिया। इस अवसर पर सीईओ जिला पंचायत अनुकूल जैन, मंदसौर एसडीएम, कृषि विभाग के अधिकारी, कर्मचारी किसान मौजूद थे।

कलेक्टर श्रीमती गर्ग ने कहा कि खेती में बायो कल्चर का उपयोग अत्यंत लाभकारी है, इससे भूमि की उर्वरता बढ़ती है और रासायनिक उर्वरकों पर निर्भरता कम होती है। उन्होंने किसानों को प्राकृतिक खेती को अपनाने और जैविक संसाधनों के अधिकतम उपयोग के लिए प्रेरित किया। कलेक्टर ने खेत में तैयार किए जा रहे प्राकृतिक जीवामृत एवं बायो कल्चर की प्रक्रिया को देखा और उसके उपयोग की जानकारी ली। किसान द्वारा खेत में उपलब्ध नरवाई अपशिष्ट को रोटावेटर के माध्यम से मिट्टी में मिलाकर प्राकृतिक खाद तैयार की जा रही है, जिसकी कलेक्टर ने सराहना की।

निरीक्षण के दौरान किसान राजकुमार पोरस ने बताया कि वे लगभग 200 बीघा भूमि पर प्राकृतिक तरीके से खेती कर रहे हैं, जिसमें करीब 13 हजार अमरूद के पौधे लगाए गए हैं। उन्होंने प्राकृतिक जीवामृत के उपयोग, उसकी मात्रा एवं समय के बारे में विस्तार से जानकारी दी। साथ ही बताया कि इस संबंध में उन्होंने कृषि विज्ञान केंद्र से प्रशिक्षण भी प्राप्त किया है। किसान द्वारा अमरूद के पौधों के बीच लहसुन की मिश्रित खेती भी की जा रही है, जिससे अतिरिक्त आय प्राप्त हो रही है।

जिला अस्पताल में बिजली गुल: अंधेरे में मरीज

माही की गूंज, रतलाम।

शहर के मुख्य स्वास्थ्य केंद्र, जिला चिकित्सालय में सुबह से ही व्यवस्थाएं पूरी तरह चरमरा गईं। सुबह से अस्पताल की बिजली गुल होने के कारण मरीजों और उनके परिजनों को भारी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है।

भीषण गर्मी और बीमारी की मार झेल रहे मरीजों के लिए बिजली का जाना दोहरी मुसीबत बन गया है। वार्डों में पंखे बंद होने से मरीज बेहाल हैं, वहीं पैथोलॉजी और अन्य जांच केंद्रों पर अंधेरा होने के कारण लैब तकनीशियन और मरीजों के बीच असमंजस की स्थिति बनी हुई है। दूर-दराज से आए लोग घंटों से लाइट आने का इंतजार कर रहे हैं।

रजिस्ट्रेशन काउंटर पर लगी लंबी कतारें

अस्पताल की कार्यप्रणाली में सबसे बड़ी बाधा पर्ची काउंटर पर देखने को मिली। डॉक्टर को दिखाने से पूर्व अनिवार्य रूप से बनने वाली पर्ची का काम पूरी तरह ठप हो गया है। कंप्यूटर सिस्टम बंद होने के कारण अस्पताल परिसर में मरीजों की लंबी कतारें लग गई हैं। कई बुजुर्ग और गंभीर मरीज बिना पर्ची के घंटों बैठने को मजबूर हैं।

मेंटेनेंस की खुली पोल

बिजली कटने की स्थिति में वैकल्पिक व्यवस्था के लिए रखा गया जनरेटर भी शोपीस बना हुआ है। बताया जा रहा है कि मेंटेनेंस के अभाव में जनरेटर खराब पड़ा है, जिसके चलते बैकअप की कोई सुविधा उपलब्ध नहीं हो सकी। यह अस्पताल प्रशासन की लापरवाही को उजागर करता है कि आपातकालीन स्थिति के लिए बैकअप सिस्टम को दुरुस्त क्यों नहीं रखा गया।

मरीजों का कहना है

'हम सुबह 6 बजे से यहाँ हैं, न पंखा चल रहा है और न ही पर्ची बन पा रही है। जनरेटर होने के बावजूद अगर हमें अंधेरे में बैठना पड़ रहा है, तो यह सरासर प्रशासन की गलती है।'

शालिनी का इंडिया कैंप में चयन

माही की गूंज, मंदसौर।

जिले के लिए गर्व का विषय है कि प्रतिभाशाली हॉकी खिलाड़ी शालिनी सिंह का चयन सब जूनियर एशिया कप की तैयारी के लिए आयोजित इंडिया कैंप में हुआ है। यह उपलब्धि उनके हालिया राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन के आधार पर मिली है।

हॉकी मंदसौर के अध्यक्ष कुलदीप सिंह सिसोदिया और सचिव अविनाश उपाध्याय ने बताया कि झारखंड में आयोजित सब जूनियर राष्ट्रीय चैंपियनशिप में मध्यप्रदेश टीम ने रजत पदक हासिल किया था, जिसमें शालिनी का प्रदर्शन बेहद सराहनीय रहा।

शालिनी ने हॉकी की शुरुआत कक्षा 5वीं में सेंट थॉमस विद्यालय से की थी। अब उन्हें आगामी 7 मई से शुरू होने वाले इंडिया कैंप में शामिल होना है, जहां वे अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करेंगी।

जिला खेल अधिकारी विजेंद्र देवड़ा ने बताया कि शालिनी मध्यप्रदेश शासन के हॉकी फीडर सेंटर और केंद्र सरकार के 'खेलो इंडिया' सेंटर मंदसौर की नियमित खिलाड़ी रही हैं। यहीं से उन्होंने राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर पहचान बनाई, जिसके बाद उनका चयन ग्वालियर स्थित प्रतिष्ठित हॉकी अकादमी में हुआ। शालिनी की सफलता के पीछे उनके परिवार का भी अहम योगदान रहा है। उनके पिता किशोर सिंह (गुड्डू) स्वयं एक अच्छे हॉकी खिलाड़ी रह चुके हैं, जिनसे उन्हें खेल के प्रति प्रेरणा मिली।

महिलाओं ने घोल दी महानगरों में मिठास

माही की गूंज, मंदसौर।

प्रदेश में महिलाओं की भागीदारी से ग्रामीण आजीविका मिशन सक्रियता से कार्य कर रहा है। मिशन की प्रभावी पहल से मंदसौर जिले के ग्राम पिपल्या कराड़िया की महिलाओं ने आत्मनिर्भरता की एक प्रेरणादायक कहानी लिखी है।

'महाराणा स्व-सहायता समूह' आज न केवल अपनी आर्थिक स्थिति मजबूत कर रहा है, बल्कि अन्य लोगों के लिए भी रोजगार के अवसर सृजित कर रहा है। समूह की महिलाएं प्राकृतिक और स्वादिष्ट जूस एवं शेक निर्माण में दक्ष हो चुकी हैं। इनके उत्पादों में लेमन, जीरा, जिंजर लेमन, कच्ची केरी, आंवला जूस के साथ-साथ मिल्क शेक, बादाम शेक, राजभोग और शाही गुलाब शेक शामिल हैं, जो ग्राहकों के बीच काफी लोकप्रिय हो रहा हैं।

जनसंपर्क अधिकारी अशोक मनवानी ने मंगलवार को बताया कि ग्रामीण आजीविका मिशन के अंतर्गत मंदसौर जिले के इस समूह को आगे बढ़ने के लिए वित्तीय सहायता के रूप में 5 लाख का बैंक ऋण, डेढ़ लाख की सामुदायिक निवेश निधि तथा 10 हजार की चक्रीय राशि प्रदान की गई। इस सहयोग ने समूह को अपने व्यवसाय को मजबूती देने और विस्तार करने में महत्वपूर्ण आधार प्रदान किया।

दिल्ली और चंडीगढ़ तक पहुंची उत्पादों की गूंज

आजीविका मिशन के मार्गदर्शन और सहयोग से समूह ने स्थानीय स्तर से आगे बढ़ते हुए राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनाई है। उज्जैन, भोपाल, दिल्ली, नोएडा, सूरत, बड़ौदा, चंडीगढ़ और गुरुग्राम जैसे बड़े शहरों में आयोजित मेलों में सहभागिता कर समूह ने अपने उत्पादों की विशेष पहचान स्थापित की है।

'महाराणा स्वसहायता समूह' प्रति माह 25 हजार से 30 हजार की शुद्ध आय अर्जित कर रहा है, जिससे वार्षिक आय लगभग 4 लाख तक पहुंच रही है। यह समूह अपनी 10 महिला सदस्यों को आर्थिक रूप से सशक्त बना रहा है, वहीं दस अन्य लोगों को प्रत्यक्ष रोजगार भी उपलब्ध करा रहा है। 'महाराणा समूह' आज ग्रामीण महिलाओं के लिए प्रेरणा बनकर उभरा है, जो यह संदेश देता है कि सही मार्गदर्शन और शासन के सहयोग से कोई भी लक्ष्य असंभव नहीं है।

प्रदेश में इन प्रकल्पों में आगे हैं महिलाएं

गौरतलब है कि मध्य प्रदेश में दीदी कैफे संचालन, होम स्टे संचालन, अनेक लघु उद्योगों और व्यवसायों के संचालन के साथ ही टोल टैक्स पर दायित्व निभाकर महिलाएं नेतृत्वकारी भूमिका निभा रही हैं। लगभग 5 लाख स्व-सहायता समूहों के संचालन में सार्थक भूमिका निभाते हुए 62 लाख से अधिक बहनें आत्मनिर्भर बनी हैं। प्रदेश में महिला सशक्तीकरण के अभियान को अच्छी सफलता मिली है। जहाँ शहरों की बेटियां पायलट बनकर हवाई जहाज उड़ा रही हैं, वहीं ग्रामीण क्षेत्रों की बेटियां क्रिकेट सहित विभिन्न खेलों और पर्वतारोहण जैसी साहसिक गतिविधियों में शामिल होकर पदक जीतकर देश और प्रदेश का नाम रौशन कर रही हैं।

12 वीं में 4 छात्राएं प्रदेश के शीर्ष-10 में, आनंदी 6 वें व जिया 7 वें स्थान पर

माही की गूंज, खंडवा।

माध्यमिक शिक्षा मंडल द्वारा बुधवार को 10वीं एवं 12वीं बोर्ड परीक्षाओं के परिणाम घोषित किए गए। खंडवा जिले की 4 बेटियों ने उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए प्रदेश की मेरिट सूची में स्थान प्राप्त किया है। विशेष बात यह रही कि ये चारों छात्राएं 12वीं कक्षा की हैं। वहीं, इस वर्ष 10वीं कक्षा से जिले का कोई भी विद्यार्थी प्रदेश की मेरिट सूची में स्थान नहीं बना पाया।

12वीं के परिणामों के अनुसार, वाणिज्य संकाय में जिले की 3 छात्राओं ने प्रदेश स्तर पर अपनी पहचान बनाई है। बेंस पब्लिक स्कूल की छात्रा आनंदी (पिता आशीष गंगराड़े) ने 6वां स्थान प्राप्त किया। सेंट स्टीफन कॉन्वेंट स्कूल, छनेरा की छात्रा जिया (पिता रवि सिंह परिहार) ने 7वां तथा सरस्वती शिशु मंदिर की छात्रा नेहा (पिता रामचंद्र गोस्वामी) ने 8वां स्थान प्राप्त किया।

इसी प्रकार जीव विज्ञान संकाय में शिक्षा एकेडमी सिल्टिया की छात्रा कामिनी कुशवाहा ने 10वां स्थान हासिल किया।

जिला स्तर की मेरिट सूची में भी छात्राओं ने उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। बेंस पब्लिक स्कूल की छात्रा मीनल (पिता अमर खानचंदानी) ने जिला स्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त किया। मीनल और राज्य स्तर पर 6वां स्थान प्राप्त करने वाली आनंदी, दोनों एक ही विद्यालय की सहपाठी हैं और आनंद नगर स्थित अष्टविनायक कोचिंग में अध्ययनरत हैं।

राज्य स्तर पर स्थान प्राप्त करने वाली आनंदी गंगराड़े ने बताया कि उनकी सफलता का मुख्य कारण समय का सही उपयोग रहा। विद्यालय और कोचिंग में अधिक समय व्यतीत होने के कारण उन्होंने घर पर सभी विषयों को बराबर समय दिया। प्रत्येक विषय के लिए अलग-अलग दिन निर्धारित कर दो-दो घंटे अध्ययन किया। उन्होंने रटने के बजाय समझकर पढ़ाई की और मोबाइल से दूरी बनाकर पूरा ध्यान अध्ययन पर केंद्रित रखा। उनका लक्ष्य चार्टर्ड अकाउंटेंट बनना है।

आनंदी गंगराड़े ने 500 में से 485 अंक प्राप्त कर 97 प्रतिशत अंक हासिल किए। मीनल खानचंदानी ने 500 में से 475 अंक प्राप्त कर 95 प्रतिशत, कामिनी कुशवाहा ने 500 में से 482 अंक प्राप्त कर 96 प्रतिशत तथा जिया परिहार ने 500 में से 484 अंक प्राप्त कर 97 प्रतिशत अंक प्राप्त किए।

12वीं का परिणाम 77.7 प्रतिशत, 10वीं में 76.85 प्रतिशत

माही की गूंज, खरगोन।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने बुधवार को भोपाल में आयोजित कार्यक्रम में एकल क्लिक के माध्यम से हायर सेकेंडरी स्कूल का परीक्षा परिणाम घोषित किया। खरगोन जिले का 12वीं का परिणाम 77.7 प्रतिशत रहा, जो पिछले वर्ष की तुलना में 8.5 प्रतिशत अधिक है।

खरगोन के प्रियदर्शनी विद्यालय की वाणिज्य समूह की छात्रा जीनी जैन ने प्रदेश की मेरिट सूची में 10वां स्थान प्राप्त किया है। उन्हें 500 में से 481 अंक प्राप्त हुए हैं। जीनी जैन ने अपनी सफलता का श्रेय अपने माता-पिता और शिक्षकों को दिया। उनका कहना है कि नियमितता और एकाग्रता के साथ प्रतिदिन दो से तीन घंटे अध्ययन करना अच्छे अंक प्राप्त करने के लिए पर्याप्त होता है।

वह आगे प्रबंधन की पढ़ाई कर लेखाकार बनने की इच्छा रखती हैं।

जिले में इस वर्ष 12वीं का परिणाम पिछले वर्ष के 69.2 प्रतिशत से 8.5 प्रतिशत अधिक रहा है। पिछले वर्षों में खरगोन जिले का परिणाम इस प्रकार रहा हैकृ वर्ष 2022 में 67.9 प्रतिशत, 2023 में 55.0 प्रतिशत, 2024 में 69.2 प्रतिशत तथा 2025 में 77.7 प्रतिशत।

इसी प्रकार 10वीं का परीक्षा परिणाम भी घोषित किया गया, जिसमें खरगोन जिले का परिणाम 76.85 प्रतिशत रहा। यह पिछले वर्ष की तुलना में लगभग 1 प्रतिशत अधिक है और पिछले पांच वर्षों में यह सबसे बेहतर प्रदर्शन माना जा रहा है।

महेश्वर के छात्र अरशद अंसारी ने प्रदेश की प्रवीण सूची में 9वां स्थान प्राप्त किया है। उन्हें 500 में से 491 अंक प्राप्त हुए हैं। अरशद अंसारी भक्तानंदजी सरस्वती शिक्षण परिसर के छात्र हैं। उन्होंने बताया कि वे प्रतिदिन पांच से छह घंटे नियमित रूप से स्वअध्ययन करते थे तथा विद्यालय में आयोजित परीक्षाओं के माध्यम से अपनी तैयारी को मजबूत करते थे। उनका लक्ष्य अभियांत्रिकी की पढ़ाई कर कंप्यूटर अभियंता बनना है।

खरगोन जिले का हाई स्कूल परिणाम पिछले वर्षों में इस प्रकार रहा हैकृ वर्ष 2022 में 52.2 प्रतिशत, 2023 में 62.0 प्रतिशत, 2024 में 61.0 प्रतिशत तथा 2025 में 79.0 प्रतिशत।

रोजगार सहायकों का प्रदर्शन लंबित मांगों को लेकर रैली, हड़ताल की चेतावनी

माही की गूंज, खरगोन।

खरगोन में ग्राम रोजगार सहायकों ने अपनी लंबित मांगों को लेकर बुधवार को जिला मुख्यालय पर रैली निकालकर विरोध दर्ज कराया। सहायकों ने चेतावनी दी है कि यदि शीघ्र उनकी मांगें पूरी नहीं की गईं, तो वे 1 मई से कलमबंद हड़ताल प्रारंभ कर देंगे।

बुधवार दोपहर लगभग 2रू30 बजे 250 से अधिक ग्राम रोजगार सहायक नवग्रह मंदिर परिसर में एकत्रित हुए। यहां सभा आयोजित करने के बाद उन्होंने नारे बाजी करते हुए रैली निकाली। रोजगार सहायकों ने बताया कि उन्हें पिछले पांच महीनों से मनरेगा के तहत मानदेय प्राप्त नहीं हुआ है। इससे उनकी आर्थिक स्थिति प्रभावित हो गई है और परिवार का भरण-पोषण करना कठिन हो रहा है।

सहायकों ने यह भी मांग की कि उन्हें ऑनलाइन कार्यों के लिए लैपटॉप और मोबाइल उपलब्ध कराए जाएं। साथ ही इंटरनेट रिचार्ज के लिए प्रतिमाह 1000 रुपये की राशि प्रदान की जाए, ताकि योजनाओं का संचालन सुचारू रूप से किया जा सके।

रोजगार सहायक संघ के जिलाध्यक्ष विजय शाक्य ने बताया कि स्थानांतरण नीति लागू करने की मांग भी रखी गई है, जिससे सहायकों को बेहतर तरीके से कार्य करने में सुविधा मिल सके। सहायकों ने स्पष्ट किया कि यदि उनकी मांगों पर शीघ्र कार्रवाई नहीं होती है, तो 1 मई से कलमबंद आंदोलन शुरू कर दिया जाएगा।

सेवानिवृत्त उप पुलिस अधीक्षक से अभद्रता पर पेंशनर्स का विरोध, खारिजी प्रतिवेदन की मांग

माही की गूंज, खरगोन।

पुलिस पेंशनर्स संघ ने एक सेवानिवृत्त उप पुलिस अधीक्षक और उनकी पत्नी के साथ कथित अभद्रता तथा उनके विरुद्ध मामला दर्ज किए जाने का विरोध किया है। संघ ने बुधवार को रैली निकालकर पुलिस महानिदेशक से इस प्रकरण में खारिजी प्रतिवेदन प्रस्तुत करने की मांग की तथा ऐसा न होने पर आंदोलन की चेतावनी दी।

यह घटना मंडला में 7 अप्रैल को पन्ना-छतरपुर मार्ग पर हुई थी। पुलिस पेंशनर्स संघ के जिलाध्यक्ष शिवराम पाटीदार ने बताया कि 80 वर्षीय सेवानिवृत्त उप पुलिस अधीक्षक भारतसिंह चौहान और उनकी पत्नी राजश्री के साथ वाहन जांच के दौरान अभद्र व्यवहार किया गया। इसके पश्चात उन पर कई गंभीर धाराओं में प्रकरण दर्ज कर लिया गया।

पाटीदार ने आरोप लगाया कि एक आरक्षक द्वारा वाहन जांच की गई, जबकि उसे इसका अधिकार नहीं था। उन्होंने कहा कि सेवानिवृत्त उप पुलिस अधीक्षक ने वर्षों तक पुलिस विभाग में सेवा दी है, ऐसे में उनके साथ हुआ यह व्यवहार निंदनीय है और अब तक इस पर कोई कार्रवाई नहीं की गई है।

पेंशनर्स संघ ने अपनी मांगों को लेकर पुलिस अधीक्षक कार्यालय में अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक शकुंतला रूहल को ज्ञापन सौंपा। उन्होंने दर्ज प्रकरण में खारिजी प्रतिवेदन प्रस्तुत करने की मांग दोहराई और चेतावनी दी कि यदि उनकी मांगें नहीं मानी गईं तो वे आंदोलन करेंगे। अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक ने संघ को आश्वासन दिया कि उनका आवेदन वरिष्ठ कार्यालय को प्रेषित कर दिया जाएगा। इस दौरान बड़ी संख्या में पुलिस पेंशनर्स उपस्थित रहे।

कुएं में गिरने से महिला की मौत, संतुलन बिगड़ने की आशंका

माही की गूंज, बड़वानी।

सेंधवा के ग्रामीण क्षेत्र अंतर्गत ग्राम वाकी गोई के पटेल फलिया में 40 वर्षीय महिला कारूबाई डुडवे की कुएं में डूबने से मृत्यु हो गई।

बुधवार सुबह लगभग 10 से 11 बजे के बीच महिला घर से निकली थीं। दोपहर तक वापस नहीं लौटने पर परिजनों ने उनकी तलाश शुरू की। शाम करीब 4 बजे कुएं में उनका शव दिखाई दिया। कुएं पर मुंडेर नहीं होने और आसपास झाड़ियां होने के कारण परिजनों को संदेह हुआ, जिसके बाद कुएं में खोजबीन करने पर शव नजर आया।

प्रारंभिक जानकारी के अनुसार आशंका है कि महिला पेड़ से पत्तियां तोड़ रही थीं, तभी अचानक संतुलन बिगड़ने से वे पास स्थित गहरे कुएं में गिर गईं। कुएं में अधिक पानी होने के कारण वे बाहर नहीं निकल सकीं। ग्रामीणों ने मिलकर उन्हें बाहर निकाला, लेकिन तब तक उनकी मृत्यु हो चुकी थी।

जल संकटः नालों के गंदे पानी से प्यास बुझाने को मजबूर ग्रामीण

माही की गूंज, बड़वानी।

खरगोन जिले के पाटी विकासखंड अंतर्गत ग्राम पंचायत पीपरकुंड के कुंडिया फलिया और कंजानिया फलिया में जल संकट की स्थिति गंभीर बनी हुई है। यहां के ग्रामीण नालों के किनारे गड्ढे खोदकर रिसने वाला गंदा पानी पीने को मजबूर हैं। यही पानी जानवर भी पी रहे हैं, जिसे ग्रामीण छानकर अपनी प्यास बुझा रहे हैं। ग्रामीणों का कहना है कि जिस पानी से हाथ धोना भी संभव नहीं, उसी को पीने के लिए विवश हैं।

गांव के निवासी लाला सस्ते ने बताया कि गर्मी बढ़ने के साथ स्थिति और खराब होती जा रही है। उन्होंने कहा कि जनसुनवाई और जनप्रतिनिधियों को कई बार आवेदन देने के बावजूद समस्या का समाधान नहीं हो पाया है। आने वाले दिनों में हालात और बिगड़ने की आशंका है।

हालांकि लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग के कार्यपालन यंत्री आर.एस. बामनिया का दावा है कि ग्राम पंचायत में पर्याप्त जल व्यवस्था है और नलकूप के माध्यम से पानी उपलब्ध कराया जा रहा है। उनके अनुसार ग्रामीणों को कुछ दूरी तय करनी पड़ती है, लेकिन पानी की कोई कमी नहीं है।

जमीनी हकीकत इससे बिल्कुल अलग नजर आती है। मौके पर देखा गया कि छोटी बच्चियां कुओं में उतरकर गंदा पानी भर रही हैं, जबकि महिलाएं और बुजुर्ग जोखिम भरे रास्तों से पानी ढोने को मजबूर हैं। कई स्थानों पर सूखे कुओं, नालों और नदियों के किनारे गड्ढे खोदकर पानी एकत्र किया जा रहा है।

आदिवासी बहुल इन क्षेत्रों में न तो हैंडपंप की सुविधा है और न ही कोई वैकल्पिक जल स्रोत उपलब्ध है। नल-जल योजना का लाभ भी ग्रामीणों तक नहीं पहुंच पाया है। कई किलोमीटर दूर से सिर पर घड़े रखकर या पशुओं के सहारे पानी लाना यहां की दिनचर्या बन चुकी है। ग्रामीण चंपालाल पिस्ता और सुनील सहित अन्य लोगों ने बताया कि पानी के लिए घंटों इंतजार करना पड़ता है और इससे उनकी दैनिक दिनचर्या प्रभावित हो रही है। कई बार मजदूरी छोड़कर पानी की व्यवस्था करनी पड़ती है, जिससे आजीविका पर भी असर पड़ रहा है। ग्रामीण भाईसीह सस्ते ने बताया कि पानी की समस्या के कारण उन्हें रोजगार तक छोड़ना पड़ रहा है। वहीं सुरमई नामक महिला ने आरोप लगाया कि चुनाव के समय नेता बड़े-बड़े वादे करते हैं, लेकिन बाद में कोई ध्यान नहीं दिया जाता। स्थिति को देखते हुए बड़ा सवाल यह है कि क्या प्रशासन इन दूरस्थ क्षेत्रों तक स्वच्छ पेयजल पहुंचा पाएगा या फिर ग्रामीणों को इसी तरह संकट का सामना करना पड़ेगा।

बिहार में भाजपा का युगः एक नया राजनीतिक अध्याय

राजनीति भी ऐसा मौसम है पता नहीं कब क्या कुछ हो जाये घ् ऐसे ही बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री नीतीश कुमार का कुछ नहीं कहा जा सकता कब उनका फैसला बदल जाये। वैसे भी बिहार की राजनीति लंबे समय तक जातीय समीकरणोंए क्षेत्रीय दलों और गठबंधन की जटिलताओं के इर्द.गिर्द घूमती रही है। लेकिन हाल के वर्षों में भारतीय जनता पार्टी का उभार राज्य की राजनीति में एक नए अध्याय का संकेत दे रहा है। यह बदलाव केवल सत्ता परिवर्तन तक सीमित नहीं हैए बल्कि राजनीतिक सोचए विकास के एजेंडे और नेतृत्व शैली में भी परिवर्तन का द्योतक है। ऐसे में बिहार में भारतीय जनता पार्टी ने सम्राट चौधरी को विधायक दल का नेता चुना जाना और बिहार के वह मुख्यमंत्री पद की शपथ लेंगे।

बिहार में भारतीय जनता पार्टी का विस्तार कोई अचानक हुई घटना नहीं है। यह एक लंबी रणनीतिक यात्रा का परिणाम हैए जिसमें संगठन की मजबूतीए जमीनी स्तर पर कार्यकर्ताओं का नेटवर्क और केंद्र की नीतियों का प्रभाव शामिल है। नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र सरकार की योजनाओंकृजैसे उज्ज्वलाए आयुष्मान भारत और पीएम आवास योजनाकृने राज्य के ग्रामीण और गरीब वर्गों में भाजपा की स्वीकार्यता ब?ाई है। इससे पार्टी को एक मजबूत जनाधार बनाने में मदद मिली है।

हालांकिए बिहार की राजनीति में नीतीश कुमार जैसे अनुभवी नेता और राष्ट्रीय जनता दल जैसे प्रभावशाली दल अभी भी मजबूत स्थिति में हैं। ऐसे में भाजपा का यह उभार एक प्रतिस्पर्धात्मक राजनीतिक वातावरण तैयार करता हैए जहां सत्ता की ल?ाई और अधिक दिलचस्प और जटिल हो गई है। भाजपा के सामने सबसे ब?ी चुनौती यह है कि वह अपने विकास के वादों को जमीन पर उतारे। बिहार आज भी बेरोजगारीए शिक्षा और स्वास्थ्य जैसी बुनियादी समस्याओं से जूझ रहा है। भाजपा को इन क्षेत्रों में ठोस सुधार करना होगा। यह उसके लिए एक स्थायी राजनीतिक आधार बनाने का अवसर हो सकता है। इसके अलावाए सामाजिक समरसता और जातीय संतुलन बनाए रखना भी भाजपा के लिए एक महत्वपूर्ण कसौटी होगी। बिहार की सामाजिक संरचना बेहद संवेदनशील हैए जहां छोटी.सी राजनीतिक चूक भी ब? सामाजिक तनाव का कारण बन सकती है। बिहार में भाजपा का उभरता हुआ युग एक परिवर्तनशील दौर का प्रतीक है। यह देखना दिलचस्प होगा कि यह बदलाव राज्य को विकास और स्थिरता की ओर ले जाता है या फिर यह केवल सत्ता के नए समीकरणों तक ही सीमित रह जाता है। आने वाले समय में बिहार की राजनीति किस दिशा में जाएगीए यह न केवल राज्य बल्कि पूरे देश की राजनीतिक धारा को भी प्रभावित करेगा।

बिहार में सम्राट चौधरी का मुख्यमंत्री बनना

ऐसे में भाजपा ने सम्राट चौधरी को विधायक दल का नेता चुना है तो यह तय है कि सम्राट चौधरी मुख्यमंत्री बनते ही केवल नेतृत्व परिवर्तन नहीं बल्कि एक व्यापक राजनीतिक संदेश और रणनीतिक बदलाव का संकेत होगा। सबसे पहलेए यह कदम भारतीय जनता पार्टी के उस प्रयास के रूप में देखा जाएगाए जिसमें वह बिहार में अपनी स्वतंत्र पहचान को और मजबूत करना चाहती है। लंबे समय तक नीतीश कुमार के नेतृत्व में गठबंधन की राजनीति करने के बादए भाजपा अब अपने चेहरे के साथ चुनावी मैदान में उतार दिया है। सम्राट चौधरी का सामाजिक आधार भी इस

चर्चा को महत्वपूर्ण बनाता है। वे पिछ? वर्ग से आते हैंए जो बिहार की राजनीति में निर्णायक भूमिका निभाता है। ऐसे में उनका मुख्यमंत्री बनना सामाजिक प्रतिनिधित्व के नए समीकरण साध सकता है और भाजपा को उन वर्गों में और गहराई तक पहुंचाने में मदद कर सकता हैए जहां अब तक अन्य दलों का प्रभाव रहा है। हालांकिए यह रास्ता आसान नहीं होगा। बिहार जैसे राज्य में प्रशासनिक अनुभवए गठबंधन संतुलन और जमीनी पक? बेहद महत्वपूर्ण होती है। लालू प्रसाद यादव और तेजस्वी यादव जैसे विपक्षी नेताओं की मजबूत राजनीतिक पक? के बीच सम्राट चौधरी को अपनी स्वीकार्यता साबित करनी होगी। इसके अलावाए यह भी देखना दिलचस्प होगा कि क्या भाजपा इस बदलाव के जरिए युवाओं और नए मतदाताओं को आकर्षित कर पाती है या नहीं। क्योंकि आज की राजनीति में केवल जातीय समीकरण ही नहींए बल्कि विकासए रोजगार और सुशासन भी उतने ही अहम मुद्दे बन चुके हैं। सम्राट चौधरी का मुख्यमंत्री बनना बिहार की राजनीति में एक नए अध्याय की शुरुआत हो सकता हैए लेकिन इसकी सफलता इस बात पर निर्भर करेगी कि वे उम्मीदों पर कितना खरे उतरते हैं। यह केवल सत्ता परिवर्तन नहींए बल्कि विश्वास और प्रदर्शन की एक ब?ी परीक्षा होगी।

अगर हम सम्राट चौधरी के राजनीतिक करियर की बात करे तो बिहार की समकालीन राजनीति में तेजी से उभरते नेतृत्व का उदाहरण माना जाता है। उनका सफर छात्र राजनीति से लेकर राज्य की सत्ता के शीर्ष तक पहुंचने का रहा है।

सम्राट चौधरी का जन्म बिहार के एक राजनीतिक परिवार में हुआ। उनके पिता शकुनी चौधरी भी राज्य की राजनीति में सक्रिय रहे। सम्राट चौधरी ने अपने राजनीतिक करियर की शुरुआत छात्र राजनीति से की और धीरे.धीरे मुख्यधारा की राजनीति में मजबूत पहचान बनाई। सम्राट चौधरी ने अपने करियर में कई राजनीतिक दलों के साथ काम किया। सम्राट चौधरी बिहार सरकार में मंत्री भी रह चुके हैं और संगठन में उनकी पक? मजबूत मानी जाती है। बीजेपी में उन्होंने प्रदेश अध्यक्ष जैसे महत्वपूर्ण पद संभालेए जिससे उनकी राजनीतिक स्थिति और मजबूत हुई। राजनीतिक परिस्थितियों और पार्टी के रणनीतिक निर्णयों के चलते सम्राट चौधरी को बिहार की राजनीति में प्रमुख चेहरा बनाया गया। मुख्यमंत्री बने तो यह उनके लंबे राजनीतिक अनुभवए संगठनात्मक कौशल और सामाजिक समीकरणों को साधने की क्षमता का परिणाम माना जाएगा।

उनकी राजनीतिक विशेषताएं। ओबीसी ;पिछ?ा वर्गद्ध नेतृत्व का प्रतिनिधित्व करते हैं। आक्रामक और स्पष्ट वक्ता सहित संगठन और जनाधार दोनों पर पक? रखते हैं।

सम्राट चौधरी का करियर यह दिखाता है कि बिहार की राजनीति में लगातार सक्रियताए रणनीति और समय के अनुसार निर्णय लेना कितना महत्वपूर्ण है। वे आज राज्य की राजनीति में एक महत्वपूर्ण और प्रभावशाली नेता के रूप में स्थापित हो चुके हैं। 2026 के अनुसार भाजपा के 16 वें राज्य के मुख्यमंत्री होंगे सम्राट चौधरी ।

नीतीश कुमार युग का अंत

नीतीश कुमार का नाम बिहार की राजनीति में एक लंबे समय तक स्थिरताए सुशासन और सामाजिक संतुलन के प्रतीक के रूप में लिया जाता रहा है। लगभग दो दशकों तक विभिन्न चरणों में सत्ता संभालने वाले नीतीश कुमार ने राज्य की राजनीति को नई दिशा दी। लेकिन अब बदलते राजनीतिक समीकरण और नेतृत्व की नई मांगों के बीच उनके युग के अंत की चर्चा तेज हो रही है। नीतीश कुमार का उदय ऐसे समय में हुआ जब बिहार राजनीतिक अस्थिरता और पिछ?पन की छवि से जूझ रहा था। उन्होंने स?कोंए शिक्षाए स्वास्थ्य और कानून.व्यवस्था के क्षेत्र में उल्लेखनीय सुधार किए। सुशासन बाबू के रूप में उनकी पहचान बनीए जो प्रशासनिक दक्षता और विकास के प्रति प्रतिबद्धता का प्रतीक थी। हालांकिए समय के साथ उनकी राजनीतिक रणनीतियों में बार.बार बदलावकृकभी के साथ गठबंधनए तो कभी किसी के साथकृने उनकी विश्वसनीयता पर सवाल ख? किए। गठबंधनों की इस राजनीति ने उन्हें सत्ता में बनाए रखाए लेकिन जनता के एक वर्ग में असमंजस और असंतोष भी पैदा किया। आज बिहार की राजनीति में युवा नेतृत्वए नई सोच और स्पष्ट वैचारिक दिशा की मांग ब? रही है। ऐसे में नीतीश कुमार का नेतृत्व पहले जैसा प्रभावशाली नहीं दिखता। उनकी उम्रए बदलते राजनीतिक हालात और लगातार बदलते समीकरण इस बात का संकेत देते हैं कि राज्य अब एक नए नेतृत्व की ओर ब? रहा है। यह भी सच है कि किसी भी नेता का राजनीतिक जीवन स्थायी नहीं होता। हर युग का एक अंत होता है और एक नई शुरुआत भी। नीतीश कुमार के योगदान को नकारा नहीं जा सकताकृउन्होंने बिहार को एक मजबूत आधार दियाए जिस पर आगे का विकास संभव है। नीतीश युग का अंत केवल एक व्यक्ति का राजनीतिक अवसान नहींए बल्कि बिहार की राजनीति में एक नए अध्याय की शुरुआत का संकेत है। आने वाला समय यह तय करेगा कि यह परिवर्तन राज्य के लिए कितना सकारात्मक साबित होता है।

सौरभ वार्ष्णेय

बाबा साहेब जयंती समारोह, आपत्तिजनक टिप्पणी के विरोध में सौंपा ज्ञापन

माही की गूंज, जोबट।

भारत रत्न एवं संविधान निर्माता डॉ. भीमराव अंबेडकर की जयंती पर मंगलवार, 14 अप्रैल 2026 को जोबट कृषि उपज मंडी प्रांगण में आदिवासी समाज एवं कोतवाल समाज द्वारा भव्य जयंती समारोह आयोजित किया गया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में समाजजन उपस्थित रहे और बाबा साहेब के चित्र पर माल्यार्पण कर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

इस दौरान आयोजित विचार गोष्ठी में वक्ताओं ने बाबा साहेब के जीवन, उनके संघर्ष एवं भारतीय संविधान निर्माण में उनके ऐतिहासिक योगदान पर प्रकाश डाला। वक्ताओं ने कहा कि डॉ. अंबेडकर ने विपरीत परिस्थितियों में शिक्षा प्राप्त कर शोषित, वंचित एवं पिछड़े वर्गों को न्याय दिलाने के लिए जीवनभर संघर्ष किया। उनके द्वारा निर्मित संविधान प्रत्येक नागरिक को समानता, स्वतंत्रता एवं न्याय का अधिकार प्रदान करता है। कार्यक्रम के पश्चात समाजजन बाबा साहेब की प्रतिमा स्थल पहुंचे, जहां विधिवत माल्यार्पण कर श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

आपत्तिजनक टिप्पणी के विरोध में ज्ञापन

सोशल मीडिया पर बाबा साहेब के विरुद्ध की गई आपत्तिजनक टिप्पणी को लेकर समाज में आक्रोश व्यक्त किया गया। इस संबंध में आरोपी कुक्षी निवासी संजय परसाई के विरुद्ध कार्रवाई की मांग को लेकर आदिवासी समाज एवं कोतवाल समाज के प्रतिनिधि पुलिस थाना जोबट पहुंचे और थाना प्रभारी विजय वास्केल को ज्ञापन सौंपा।

ज्ञापन में आरोपी के विरुद्ध भारतीय न्याय संहिता, 2023, एससी/एसटी अत्याचार निवारण अधिनियम, 1989 एवं आईटी एक्ट, 2000 की प्रासंगिक धाराओं के तहत प्रकरण दर्ज कर सख्त कार्रवाई करने की मांग की गई। साथ ही मामले की गंभीरता को देखते हुए राष्ट्रीय सुरक्षा कानून के तहत भी कार्रवाई की मांग की गई। थाना प्रभारी द्वारा समाजजनों को निष्पक्ष जांच कर उचित कार्रवाई का आश्वासन दिया गया।

इस दौरान कार्यक्रम में जिला पंचायत सदस्य श्रीमती रिंकुबाला डावर, श्रीमती मीना डावर, भूरसिंह रावत (सीईओ), पातालसिंह बघेल (ब्लॉक अध्यक्ष, कोतवाल समाज), वीरेंद्र बघेल, नीलेश डावर, दिशांत गाडरिया, नेहरू बघेल, राजूसिंह सस्तिया, राजेश सस्तिया, राजू चोंगड, अंतरसिंह रावत, राजूसिंह डावर, अजयसिंह डावर, मुकेश डावर, बापूसिंह बामनिया, जुलाल पटेल, कुँवरसिंह भयडिया, सोहन बघेल, कैरम बघेल सहित बड़ी संख्या में समाजजन उपस्थित रहे।

बोर्ड परीक्षा परिणाम प्रदर्शन पर कलेक्टर ने हर्ष व्यक्त कर विद्यार्थियों को दी बधाई

माही की गूंज, आलीराजपुर।

मध्यप्रदेश माध्यमिक शिक्षा मंडल द्वारा घोषित हाई स्कूल और हायर सेकेंडरी परीक्षा परिणामों में आलीराजपुर जिले के विद्यार्थियों ने उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है। इस उपलब्धि पर कलेक्टर श्रीमती नीतू माथुर ने हर्ष व्यक्त करते हुए सभी विद्यार्थियों, शिक्षकों और अभिभावकों को हार्दिक बधाई दी। उन्होंने बताया कि इस वर्ष जिले का 10वीं कक्षा का परीक्षा परिणाम 92.14 प्रतिशत रहा, जो पिछले वर्ष के 78.70 प्रतिशत से काफी बेहतर है। वहीं 12वीं कक्षा का परिणाम भी उल्लेखनीय सुधार के साथ 91.59 प्रतिशत दर्ज किया गया, जो पिछले वर्ष 61.28 प्रतिशत था। इस शानदार प्रदर्शन के चलते जिला 10वीं में पूरे प्रदेश में द्वितीय स्थान और 12वीं में चतुर्थ स्थान पर रहा है।

कलेक्टर श्रीमती नीतू माथुर ने सफल विद्यार्थियों की मेहनत, लगन और अनुशासन की सराहना करते हुए कहा कि जिले के छात्रों में अपार प्रतिभा है, जिन्हें सही मार्गदर्शन मिलने पर वे हर ऊंचाई हासिल कर सकते हैं। उन्होंने शिक्षकों के समर्पण और सीमित संसाधनों में भी उत्कृष्ट परिणाम देने के प्रयासों की भी प्रशंसा की। साथ ही जिला शिक्षा अधिकारी सुश्री निधि मिश्रा का उनके प्रयासों के लिए सम्मान भी किया।

प्रभारी जिला शिक्षा अधिकारी एवं एसडीएम सुश्री निधि मिश्रा ने बताया कि इस सफलता के पीछे योजनाबद्ध तैयारी और लगातार प्रयासों की महत्वपूर्ण भूमिका रही। उन्होंने बताया कि कलेक्टर श्रीमती नीतू माथुर के मार्गदर्शन में जिले में वरिष्ठ शिक्षकों द्वारा प्रश्न बैंक तैयार कराया गया, जुलाई से नियमित तैयारी शुरू कराई गई, रेमेडियल कक्षाएं संचालित की गईं तथा शिक्षकों को विषयवार प्रशिक्षण दिया गया। साथ ही ब्लूप्रिंट आधारित शिक्षण और समय-समय पर परीक्षा परिणामों का विश्लेषण भी किया गया। जिले की इस उपलब्धि पर सभी विद्यार्थियों, शिक्षकों और अभिभावकों को बधाई एवं शुभकामनाएं दी।

अंबेडकर की जयंती के नवीन सदस्यता अभियान का शुभारंभ

माही की गूंज, बरझर।

मध्यप्रदेश शासन के सहकारिता विभाग एवं एपेक्स बैंक, भोपाल के निर्देशानुसार सहकारिता विभाग आलीराजपुर द्वारा प्राथमिक कृषि साख सहकारी समितियों के माध्यम से नवीन सदस्यता महाअभियान का शुभारंभ भारत रत्न डॉ. भीमराव अंबेडकर की जयंती के अवसर पर पूरे जिले में किया गया। इस अभियान के तहत प्रदेश स्तर पर 10 लाख नए सदस्य बनाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है।

इस अभियान में महाप्रबंधक एआई खान नोडल अधिकारी गुप्ता फील्ड प्रभारी राजेश राठोड़ के दिशा-निर्देश में जिला आलीराजपुर में कुल 26 समितियों को 15,000 नए सदस्य बनाने का लक्ष्य प्राप्त हुआ है। भोपाल से आयोजित वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग में प्राप्त दिशा-निर्देशों के अनुसार अभियान की शुरुआत उत्साहपूर्वक की गई। जिसमें आदिम जाति सेवा सहकारी संस्था बरझर में भी नवीन सदस्यों का प्रबंधक व कर्मचारियों ने पुष्पगुच्छ से स्वागत किया गया तथा किसानों को समिति सदस्यता के लाभों की विस्तृत जानकारी दी गई। प्रबन्धक आजाद खान ने किसानों को बताया गया कि समिति सदस्य बनने पर उन्हें शून्य प्रतिशत ब्याज पर ऋण सुविधा, खाद-बीज की सहज उपलब्धता, शासन की विभिन्न योजनाओं का लाभ तथा पशुपालन हेतु किसान क्रेडिट कार्ड जैसी सुविधाएं प्राप्त होंगी। नवीन सदस्यता के पहले दिन बरझर संस्था में कुल 10 सदस्य बनाएं गये।इस अवसर पर लालसिंह चौहान, अंकीत पंचाल, भारत सिंह व नवीन सदस्य मौजूद थे।

एक्सपायरी कोल्ड ड्रिंक्स पर विभाग की कार्रवाई

माही की गूंज, आलीराजपुर।

कलेक्टर नीतू माथुर के निर्देशन में राजस्व एवं खाद्य विभाग द्वारा संयुक्त रूप से अभियान के माध्यम से खाद्य दुकानों पर जांच की गई। इस दौरान अनुविभागीय अधिकारी (राजस्व) सुश्री निधि मिश्रा एवं खाद्य अधिकारी श्री गडरिया के नेतृत्व में दल ने शहर के विभिन्न होलसेल कोल्ड ड्रिंक्स विक्रय प्रतिष्ठानों, गोदामों एवं होटलों का निरीक्षण किया।

जांच के दौरान कई स्थानों पर एक्सपायरी कोल्ड ड्रिंक्स पाए जाने पर उन्हें तत्काल जब्त किया गया। साथ ही विभिन्न ब्रांड के कोल्ड ड्रिंक्स एवं मिठाइयों के नमूने भी लिए गए, जिन्हें गुणवत्ता परीक्षण हेतु प्रयोगशाला भोपाल भेजा जा रहा है। कार्रवाई प्रमुख रूप से आरआर ग्रुप कैम्पा, शुभम जिंसी कोल्ड ड्रिंक्स, श्री मार्केटिंग कोल्ड ड्रिंक्स, शारणेश्वर टी स्टॉल एवं अभय एव्हरफ्रेश पर की गई है। अनुविभागीय अधिकारी सुश्री निधि मिश्रा ने स्पष्ट किया कि आमजन के स्वास्थ्य के साथ किसी भी प्रकार की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी।

जल गंगा संवर्धन अभियान अंतर्गत किया जल संरक्षण का संकल्प

माही की गूंज, आलीराजपुर।

मध्य प्रदेश जन अभियान परिषद के निर्देशन में संचालित जल गंगा संवर्धन अभियान 2026 के द्वितीय चरण जल स्रोत सेवा समागम कार्यक्रम अंतर्गत विकासखंड सोंडवा के बखतगढ़ सेक्टर के ग्राम पंचायत उमरखड़ में विविध जल संरक्षण गतिविधियों का प्रभावी आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत जल स्रोत पूजन एवं वृक्ष पूजन के साथ हुई, जिसमें ग्रामीणों ने प्रकृति एवं जल के प्रति श्रद्धा व्यक्त करते हुए संरक्षण का संकल्प लिया। इस दौरान मातृशक्ति का विशेष योगदान रहा, जिन्होंने बढ़-चढ़कर भाग लेते हुए कार्यक्रम को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसके पश्चात दूधी नदी पर स्थित झूठ कुंड की साफ-सफाई की गई, जिसमें स्थानीय ग्रामीणों, मातृशक्ति एवं छात्रों ने सक्रिय सहभागिता निभाई। जल संरक्षण को बढ़ावा देने हेतु दूधी नदी पर लगभग 150 बोरियों का बोरी बंधान (चेकडैम) निर्मित किया गया, जिससे वर्षा जल संचयन एवं भूजल स्तर में वृद्धि की दिशा में महत्वपूर्ण पहल की गई। कार्यक्रम के दौरान उपस्थित सभी ग्रामीणों को जल संरक्षण की शपथ दिलाई गई। साथ ही, ग्राम स्तर पर आयोजित बैठक एवं संगोष्ठी के माध्यम से जल संकट, जल स्रोतों के संरक्षण एवं जनभागीदारी के महत्व पर विस्तार से चर्चा की गई। इस अवसर पर जिला समन्वयक दीपक जगताप ने अपने उद्बोधन में जल संरक्षण की आवश्यकता पर जोर देते हुए कहा कि जल का संरक्षण ही भविष्य की सुरक्षा है, इसके लिए सभी को मिलकर प्रयास करना होगा। कार्यक्रम में विकासखंड समन्वयक नगरिया सस्तिया, सेक्टर प्रभारी अर्जुन निगवाल, प्रस्फुटन समिति सदस्य हसन कनेश, राकेश परामर्शदाता, छात्र-छात्राएं एवं बड़ी संख्या में ग्रामीणजन उपस्थित रहे।

उज्जैन-झालावाड़ राष्ट्रीय राजमार्ग पर किसानों का चक्काजाम

माही की गूंज, उज्जैन।

जिले में भारतीय किसान संघ के कार्यकर्ताओं ने उज्जैन-झालावाड़ राष्ट्रीय राजमार्ग पर चक्काजाम कर दिया। उन्होने उज्जैन जिला आपूर्ति अधिकारी शालू वर्मा के खिलाफ जमकर नारेबाजी की और आरोप लगाए।

साथ ही शालू वर्मा को हटाने के लिए प्रशासन के सामने मांग भी रख दी। प्रदर्शन करने वाले कार्यकर्ता घट्टिया, नजरपुर, निपालिया, जैथल, पिपलिया हरजी और घोंसला क्षेत्र के थे। करीब दो घण्टे तक चले जाम के चलते दोनों ओर वाहनों की लम्बी कतार लग गई।

मौके पर कार्यकर्ताओं का आरोप रहा कि निपानिया गोयल में किसानों ने समर्थन मूल्य पर गेहूं विक्रय हेतु स्लॉट बुकिंग में बहुत देरी की। सत्यापन में समस्याएं आई। वहीं किसान घण्टों कतार में खड़े होकर परेशान होते रहे। जब जिला आपूर्ति अधिकारी उनक समस्याओं के निदान के लिए नहीं आई तो वे सडक़ पर प्रदर्शन एवं जाम लगाने के लिए उतर गए। उनके समर्थन में क्षेत्र के अनेक किसान और कार्यकर्ता मौके पर जुट गए। भीषण गर्मी के बीच जहां कार्यकर्ता और किसान सडक़ पर जुटे थे वहीं यात्री बस ओर वाहनों में जाम लगने पर बैठे लोग गर्मी के कारण परेशान होते रहे।

मौके पर ध्वनि विस्तारक यंत्र पर भी आक्रोश जताया गया। जिला आपूर्ति अधिकारी के अलावा महिदपुर की खाद्य निरीक्षक सुरभि जैन का भी विरोध किया गया। आरोप रहा कि इन लोगों की अनदेखी के कारण परेशानी उत्पन्न हुई। बताया कि जिले के करीब 42 हजार सर्वे नम्बरों का पंजीयन सत्यापित नहीं हो पाया है। जबकि सेटेलाइट के माध्यम से हुए पंजीयन में कई असत्यापित हो गए। ऐसा होने से छोटे किसानों के स्लॉट बुक ही नहीं हुए। इससे उनकी उपज की खरीदी की प्रक्रिया प्रभावित हो गई। इसकी शिकायत कई बार खाद्य निरीक्षक और जिला खाद्य आपूर्ति अधिकारी को की गई लेकिन किसी ने समाधान नहीं निकाला। इसीलिए चक्काजाम किया गया।

इधर जाम की सूचना मिलने पर मौके पर एसडीएम राजाराम करजरे, डीएसपी भारतसिंह यादव, थाना प्रभारी करण खोवाल, तहसीलदार आदर्श शर्मा पहुंचे और किसानों को समझाइश दी।

दिनदहाड़े अपहरण की कोशिश नाकाम

माही की गूंज, धार।

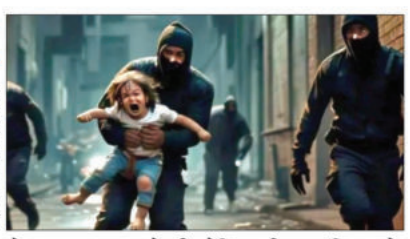

शहर के भोज नगर क्षेत्र में मंगलवार दोपहर एक सनसनीखेज घटना सामने आई, जहां बाइक सवार तीन बदमाशों ने 8 वर्षीय बच्चे का अपहरण करने की कोशिश की। हालांकि बच्चे की तत्परता और साहस से यह वारदात टल गई, जिससे क्षेत्र में सुरक्षा को लेकर चिंता बढ़ गई है।

प्रत्यक्ष जानकारी के अनुसार बदमाशों ने आपस में बच्चे को उठाने की बात कही और उसे बाइक पर बैठाने का प्रयास किया। खतरे को भांपते हुए तनिष्क तुरंत वहां से भागा और सामने स्थित पड़ोसी हरिराम यादव के घर में घुसकर खुद को सुरक्षित कर लिया। बच्चे के अचानक भाग जाने से घबराकर तीनों आरोपी मौके से फरार हो गए।

सीसीटीवी में कैद, लेकिन पहचान नहीं

घटना के बाद परिजनों ने आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों की जांच की, जिसमें संदिग्धों की गतिविधियां तो नजर आईं, लेकिन चेहरे स्पष्ट नहीं हो पाए। इसके चलते उनकी पहचान अब तक नहीं हो सकी है।

पुलिस से कार्रवाई और गश्त बढ़ाने की मांग

बच्चे के पिता केतन वर्मा ने कोतवाली थाने में लिखित शिकायत देकर आरोपियों की जल्द गिरफ्तारी की मांग की है। साथ ही उन्होंने क्षेत्र में पुलिस गश्त बढ़ाने और सुरक्षा व्यवस्था सुदृढ़ करने की भी अपील की है।

वेतन बढ़ाने को लेकर मजदूरों का फूटा गुस्सा

माही की गूंज, पीथमपुर।

औद्योगिक क्षेत्र पीथमपुर में एक के बाद एक कंपनियों में हो रही हड़तालों ने श्रमिक असंतोष को खुलकर सामने ला दिया है। लगातार बढ़ती महंगाई, वेतन वृद्धि नहीं होना और मूलभूत सुविधाओं की कमी के कारण मजदूरों में नाराजगी बढ़ती जा रही है।

मदरसन, बायो स्पंज और हुंडई मोबिस कंपनी के श्रमिक पिछले दो दिनों से हड़ताल पर हैं। श्रमिकों का कहना है कि महंगाई के इस दौर में गैस सिलेंडर, खाद्य सामग्री और रोजमर्रा की जरूरतों की कीमतें लगातार बढ़ रही हैं, लेकिन कंपनियों द्वारा वेतन में कोई बढ़ोतरी नहीं की जा रही है। इससे उनके परिवार का खर्च चलाना मुश्किल होता जा रहा है।

नहीं मिल रहा न्यूनतम वेतन का लाभ

मजदूरों ने आरोप लगाया है कि उन्हें शासन द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन का लाभ नहीं मिल रहा है। इसके अलावा कंपनियों में पर्याप्त मैनपावर नहीं होने के कारण मौजूदा कर्मचारियों पर काम का दबाव लगातार बढ़ता जा रहा है। श्रमिकों का यह भी कहना है कि परिवहन सुविधा के नाम पर कंपनियां उनके वेतन से अधिक कटौती कर रही हैं, जबकि उन्हें उचित बस सुविधा तक उपलब्ध नहीं हो पा रही है।

मजदूरों ने निकाला पैदल मार्च

अपनी मांगों को लेकर मजदूर कंपनी परिसर से लगभग दो किलोमीटर पैदल मार्च निकालते हुए विकास भवन स्थित श्रम कार्यालय पहुंचे। यहां उन्होंने वेतन वृद्धि, पर्याप्त स्टाफ, परिवहन सुविधा और अन्य मूलभूत सुविधाओं की मांग को लेकर ज्ञापन सौंपा।

प्रशासन हुआ अलर्ट, बातचीत जारी

हड़ताल और पैदल मार्च की सूचना मिलते ही प्रशासन अलर्ट मोड पर आ गया। नगर पुलिस अधीक्षक और थाना प्रभारी भारी पुलिस बल के साथ मौके पर पहुंचे। पुलिस अधिकारियों ने स्थिति को नियंत्रित करते हुए मजदूरों को शांत कराया। फिलहाल श्रम विभाग और पुलिस की मौजूदगी में मजदूरों तथा कंपनी प्रबंधन के बीच बातचीत जारी है। प्रशासन का प्रयास है कि दोनों पक्षों के बीच सहमति बनाकर विवाद का जल्द समाधान किया जाए।

किसानों की अनदेखी कर निकल गए नवागत कलेक्टर, सड़क पर उतरे किसान, पेटलावद-रायपुरिया मार्ग बाधित

गेहूं उपार्जन संकट सेटेलाइट वेरिफिकेशन में उलझे तीन हजार किसान, एसडीएम पर लगे गंभीर आरोप

कलेक्टर के बिना मिले निकल जाने के बाद सड़क पर उतरे किसान।

सड़क पर गेहूं डाल कर मार्ग बाधित किया, कलेक्टर से मिलने पर अड़े।

माही की गूंज, पेटलावद। राकेश गेहलोत

मंगलवार को किसान यूनियन के द्वारा सोसाइटियों के माध्यम से गेहूं खरीदी में हो रही परेशानीयों को लेकर पेटलावद मंडी प्रांगण में धरना प्रदर्शन करने का आह्वान किया था। जिसके बाद बुधवार सुबह 11 बजे से किसान मंडी प्रांगण में ढोल लेकर पहुंचे और मोहन सरकार को जगाने की कोशिश की। इसके तुरंत बाद किसान यूनियन के बैनर तले किसान धरने पर बैठ कर सरकार के खिलाफ नारेबाजी पर उतर गए। किसानों के प्रदर्शन के बाद राजस्व के अधिकारी तहसीलदार अनिल बघेल, थाना प्रभारी निर्भयसिंह भूरिया ओर कृषि विभाग के अधिकारी मौके पर पहुंच कर किसानो को समझाइश देते दी। अपनी मांगो का ज्ञापन देने के साथ गेहूं खरीदी में आने वालीं समस्याओं का एक-दो दिन में निराकरण करने का आश्वासन दिया लेकिन किसान उच्च अधिकारियों से मिलने पर अड़े रहे।

स्लॉट बुक नहीं होने से किसानो के गेहूं नहीं तुल रहे

गेहूं उपार्जन के लिए पंजीकृत किसानों के स्लॉट बुक न होने से किसानों का धैर्य जवाब दे गया है। अपनी समस्याओं को लेकर भारतीय किसान यूनियन के बैनर तले बड़ी संख्या में किसान मंडी प्रांगण में धरने पर बैठ गए हैं। किसानों ने शासन और प्रशासन के खिलाफ जमकर नारेबाजी की और स्पष्ट किया कि जब तक उनकी समस्याओं का ठोस समाधान नहीं होता, वे पीछे नहीं हटेंगे। हंगामे की सूचना मिलते ही मौके पर पहुंचे जिम्मेदार दल-बल के साथ मौके पर पहुंचे। उन्होंने किसानों को समझाने और धरना समाप्त करने का प्रयास किया, लेकिन किसान अपनी मांग पर अड़े रहे। भारतीय किसान यूनियन के अध्यक्ष महेंद्र हामड़ ने किसानों की व्यथा बताते हुए कहा कि किसान पहले से ही आर्थिक तंगी से जूझ रहा है। समय पर उपज न बिकने के कारण किसान अपना किसान क्रेडिट कार्ड (केसीसी) नहीं भर पाए हैं, जिससे वे डिफाल्टर की श्रेणी में आ गए हैं। अब जब फसल तैयार है, तो पोर्टल की तकनीकी खामियां उनकी कमर तोड़ रही हैं।यूनियन के महामंत्री जितेंद्र पाटीदार ने प्रशासन पर लापरवाही का आरोप लगाते हुए बताया कि, पहले तो पंजीयन की प्रक्रिया में देरी की गई और फिर बार-बार तुलाई की तारीखें बढ़ाई गईं। अब जब वास्तविक रूप से गेहूं तुलवाने का समय आया है, तो पोर्टल पर स्लॉट बुक नहीं हो रहे हैं। इसका मुख्य कारण सेटेलाइट वेरिफिकेशन का न होना बताया जा रहा है। पाटीदार के अनुसार, इस तकनीकी समस्या के कारण क्षेत्र के लगभग तीन हजार किसान उपार्जन प्रक्रिया से बाहर हो गए हैं, जिससे उनके सामने आजीविका का संकट खड़ा हो गया है। पूरे मामले पर तहसीलदार अनिल बघेल का कहना है कि सेटेलाइट मैपिंग में आ रही दिक्कतों की वजह से स्लॉट बुकिंग में परेशानी आई है। उन्होंने किसानों को आश्वस्त किया कि सत्यापन (वेरिफिकेशन) का कार्य युद्धस्तर पर चल रहा है और इसे जल्द ही पूरा कर लिया जाएगा। प्रशासन का दावा है कि किसी भी पात्र किसान को उपार्जन से वंचित नहीं रहने दिया जाएगा, हालांकि किसान फिलहाल प्रशासन के इन आश्वासनों से संतुष्ट नजर नहीं आ रहे हैं।

नवागत कलेक्टर पहुंचे पेटलावद, किसानो से नहीं मिले, भड़के किसान सड़क पर उतरे

इधर प्रशासन के अधिकार किसानो को समझाइश देते रहे उधर नवागत कलेक्टर के पेटलावद पहुंचने की सूचना के बाद किसानो की उम्मीद बड़ी थी कि कलेक्टर साहब उनकी सुनवाई कर निराकरण करेंगे। रायपुरिया का दौरा करने लिए नवागत कलेक्टर पेटलावद रेस्ट हाउस पहुंचे जहां स्थानीय अधिकारियों के हस्तक्षेप के बाद कुछ किसान कलेक्टर से मिलने रेस्ट हाउस पहुंचे ,लेकिन कलेक्टर साहब किसानों से बिना मिले निकल गए ओर किसानो को मिलने के लिए रायपुरिया आने का कहा गया। जिसके बाद किसानो में आक्रोश की स्थिति बन गई ओर किसानो ने अपनी गेहूं से भरी ट्राली पेटलावद रायपुरिया मार्ग पर मंडी के सामने खाली कर मार्ग बाधित कर दिया। मार्ग बाधित होने के बाद मौके पर पहुंची पुलिस ने आने जाने वाले वाहनों का मार्ग परिवर्तन कर ट्रैफिक व्यवस्था को बिगड़ने से रोका है।

एसडीएम के व्यवहार ने किसानों ओर सरकार को किया आमने-सामने

किसानों ने एक दिन पहले ही अपने प्रदर्शन के लिए चेता दिया था लेकिन हर बार की तरह एक बार फिर एसडीएम तनुश्री मीणा ने हठधर्मिता दिखाते हुए किसानों की समस्या का निराकरण करने का कोई आश्वासन देने की बजाए अपने अधीनस्थ अधिकारियों के माध्यम से किसानों अपने कार्यालय में बुलाने का प्रयास किया। कलेक्टर के पेटलावद पहुंचने के बाद एसडीओपी अनुरूक्ति सबनानी ओर थाना प्रभारी निर्भयसिंह भूरिया ने किसानों को समझा कर रेस्ट हाउस पर कलेक्टर से बात करने के लिए बुलावा किया लेकिन यहां बात नहीं बनी ,जिस पर किसानों का सीधा आरोप एसडीएम पेटलावद पर लगा की उनके द्वारा किसानो की आवाज नए कलेक्टर तक पहुंचाई ही नहीं गई ओर सीधे उनको रायपुरिया में ही मुलाकात करने के लिए कहा गया। इससे पहले भी किसानों ने कई बार अपनी समस्याओं को सरकार तक पहुंचाने की कोशिश की लेकिन एसडीएम पेटलावद तनुश्री मीणा सरकार ओर किसानो के बीच की खाई को गहरी करती गई जिससे नाराज किसान सरकार पर गंभीर आरोप लगा रहे है।

दो साल का कार्यकाल विवादों में, ऑफिस से बहार नहीं निकली

आईएएस जैसी पोस्ट के साथ अपने ट्रेनिंग प्रेड में एसडीएम बन के पेटलावद आने के बाद से मैडम अपने चैंबर में बैठ कर ऐसी की हवा खाती रही। उनके कार्यकाल के दौरान कई विभागों के कर्मचारी अपनी समस्याओं को लेकर ज्ञापन देने पहुंचे लेकिन मैडम खुद कभी उठ कर अपने चैंबर से बहार नहीं आई और कुछ लोगों को अपने केबिन में बुला कर ज्ञापन लेकर इतिश्री कर दी। उनके विभाग के पटवारी तक उनके कार्यालय के बहार धरना दे चुके है। किसान बीएसएनएल टावर पर चढ़ने से ले कर पेटलावद राजगढ़ मार्ग पर चक्काजाम करने तक प्रदर्शन कर चुके हैं लेकिन हर बार स्थिति को खुद नियंत्रण करने की बजाए अपने अधीनस्थ अधिकारियों को आगे कर खुद अपनी जिम्मेदारीयों से भाग खड़ी हुई। दूसरी ओर स्थानीय राजनीति में भी उनके व्यवहार को लेकर सत्तापक्षीय नेता नाराज रहे और लगातार शिकायते भोपाल स्तर तक पहुंचाई गई लेकिन मैडम के व्यवहार में कोई सुधार नहीं आया। पत्रकारों के साथ में मैडम का व्यवहार इसी प्रकार का रहा ओर मुख्यमंत्री के दौरे पर मीडिया पास जारी करने में पत्रकारों को दो भागों में बांटने की नाकाम कौशिक कर कई पत्रकारों को पास जारी नहीं किए जिससे नाराज पत्रकार भी मैडम के विरुद्ध निंदा प्रस्ताव पारित कर चुके है। कुल मिला कर दो साल के इस कार्यालय में किसान,नेता,पत्रकार , कर्मचारी सभी को सरकार के खिलाफ करने का काम एसडीएम मीणा ने कर सरकार के विरुद्ध माहौल बनाने का कार्य किया है।

मंडी परिसर में धरने पर बैठे किसान।

समझाइश देते तहसीलदार अनिल बघेल और कृषि विभाग के अधिकारी।

अजब एमपी का गजब झाबुआः व्यक्ति एक ओर दो जगह नौकरी

प्राचार्य पर आरोप यह कि मोबेलाईजर को बनाया अतिथि शिक्षक व बिना बीएड-डीएड के भी नियुक्त किया अतिथि शिक्षक

माही की गूंज, खवासा।

जब बात अजब एमपी की आती है तो पश्चिमी छोर पर बसे गजब झाबुआ जिले की कहानिया भी सामने आती है। यह झाबुआ जिला जहां एक तरफ माफियाओं के आतंक के साथ अपनी पहचान बना चुका है। वही झाबुआ प्रशासनिक अमले में भ्रष्टाचार व अनियमित्ता का बोलबाला भी सामने है, जिसके कारण भी जिले को पहचाना जाता है। जिले का इतिहास रहा है कि, यहां छोटे कर्मचारियों से लेकर कलेक्टर तक भ्रष्टाचार की गिरफ्त में सामने आए। तो वहीं पूर्व कलेक्टर नेहा मीना ने जिस जनपद में अच्छे कार्य के नाम पर प्रधानमंत्री से सम्मान प्राप्त किया, उसी रामा जनपद कार्यालय में सम्मान के बाद 1 करोड़ के करीब का भ्रष्टाचार सामने आ चुका है।

यह वही जिला है जहां अनियमित्ताओं और शिकायतों का अंबार है। परंतु इन शिकायतों के बाद भी जिला प्रशासन समस्त शिकायतों के निराकरण का हवाला देकर म.प्र. के कैबिनेट एवं प्रभारी मंत्री से राष्ट्रपति तक का सम्मान का आश्वासन मंचों से करवाया गया। ऐसे में ठेठ ग्रामीण अंचल तक कोई अनियमित्ताए व अनियमित्ताओं पर कोई शिकायते न हो यह इस जिले में संभव नहीं है।

कुछ ऐसा ही मामला थांदला व पेटलावद विकासखंड के अंतर्गत सामने आया है। जिसमें बड़ी बात यह कि, एक महिला सोनी तानसिंग निनामा जो की, पेटलावद विकासखंड के ग्राम पंचायत असालिया में मोबेलाईजर के पद पर कार्यरत थी। उसी मोबेलाईजर महिला सोनी तानसिंग निनामा की थांदला विकासखंड के खवासा कन्या संकूल के अंतर्गत आने वाली शा. नवीन माध्यमिक विद्यालय नाहरपुरा में अतिथि शिक्षक वर्ग 2 में नियुक्ति की गई।

सूचना अधिकार अधिनियम के अंतर्गत गोविंद पिता नाथू सिंग भाभर ने खंड शिक्षा अधिकारी थांदला व पेटलावद जनपद कार्यालय से प्रमाणित जानकारी सोनी निनामा के संबंध में मांगी गई। तो सामने आया कि, यह विवाहित महिला होकर असालिया ग्राम पंचायत में मोबेलाईजर के पद पर पदस्थ है। और वहां से प्रतिमाह 4 हजार रूपए के हिसाब से शासकीय मानदेय भी प्राप्त कर रही है। वहीं थांदला खंड शिक्षा कार्यालय के माध्यम से मिली जानकारीनुसार सामने आया कि, सोनी निनामा शासकीय नवीन माध्यमिक विद्यालय नाहरपुरा में अतिथि शिक्षक वर्ग 2 में पदस्थ होकर प्रतिमा 14 हजार रुपए के मान से शासकीय मानदेय प्राप्त कर रही है। इस तरह एक ही महिला दोनों स्थानों पर कार्यरत होना और दोनों जगह से एक साथ शासकीय मानदेय प्राप्त करना। तथा उक्त खुलासा प्रशासनिक कार्रवाई के साथ नहीं बल्कि शिकायतकर्ता की शिकायत व सूचना अधिकार के तहत जानकारी मांगने के बाद मामला सामने आना। इस तरह की अजीबो-गरीब कहानी म.प्र. व म.प्र. के झाबुआ जिले में आम बात मानी जा सकती है। क्योंकि एमपी व एमपी के इस झाबुआ जिले में कई ऐसे एक से हटकर एक मामले सामने आते हैं जो हेरत-अंगेज होते हैं। ऐसे में इस तरह के मामले छोटे ही कहे जा सकते हैं और बिना किसी बड़ी कार्रवाई के इस तरह के मामले रफा-दफा कर दिए जाते हैं।

अभ्यर्थी सोनी ने दोनो विभागो को गुमराह कर दोनो अलग-अलग महिला होना बताने का प्रयास किया जिसमें मोबेलाईजर वाली नियुक्ति में पति का नाम उसका सरनेम के साथ अपने आप को निनामा बताया। वही अतिथि शिक्षक भर्ती में नाम के पिछे पिता का उल्लेख कर अपने आप को कटारा बताने का प्रयास किया परन्तु दोनो मानदेय एक ही खवासा एसबीआई के बैंक खाते में राशि प्राप्त की।

मामले में गोविंद भाभर ने बताया कि, एक ही व्यक्ति किसी भी दो जगह पर शासकीय मानदेय प्राप्त कर पदस्थापना नहीं हो सकती है। जिसमें कन्या शाला संकुल खवासा के प्राचार्य की गलती है और साँठ-गाँठ के साथ सोनी निनामा की नियुक्ति मोबेलाईजर होते हुए भी नाहरपुरा माध्यमिक स्कूल में अतिथि शिक्षक वर्ग 2 में नियुक्ति की गई। वहीं गोविंद भाभर ने उक्त अनियमित्ता की शिकायत झाबुआ कलेक्टर की जनसुनवाई में 7 अप्रैल को की। तथा उक्त शिकायत में कन्या शाला स्कूल खवासा में पदस्थ स्थाई शिक्षक दुर्गा प्रसाद पाटीदार के पुत्र मयंक दुर्गा प्रसाद पाटीदार के संबंध में भी शिकायत की गई। जिसमें बताया कि, मयंक पाटीदार को बिना बीएड-डीएड की डिग्री के ही शासकीय माध्यमिक विद्यालय सेमलिया में अतिथि शिक्षक वर्ग 3 के पद पर नियुक्ति किया है। शिकायत में बताया कि, आरटीई के तहत किसी भी अभ्यर्थी को बिना मैरिट व बीएड-डीएड के अतिथि शिक्षक पर नियुक्ति नहीं की जा सकती है। शिकायत में बताया कि, सोनी निनामा व मयंक पाटीदार की नियुक्ति प्राचार्य मानसिंग़ राजपत ने साँठ-गाँठ कर फर्जी तरीके से नियुक्ति की गई है। इस संबंध में प्राचार्य के साथ मयंक व सोनी के विरूद्ध भी कार्रवाई की जाए।

गोविंद भाभर की शिकायत के बाद झाबुआ एसी मैडम व डिप्टी कलेक्टर श्री बघेल, टीम के साथ जॉच हेतु शा.कन्या. हा.सै. स्कूल खवासा पहुंचे। जांच में क्या सही क्या गलत यह कोई जानकारी सार्वजनिक नहीं की गई।

मामले में कन्या शाला खवासा के प्राचार्य श्री राजपत से बात की तो बताया, मयंक की बीएड 2021-22 की डिग्री है और उसी के आधार पर मैरिट अनुसार नियुक्त किया गया था। वही सोनी निनामा के संबंध में प्राचार्य ने बताया, उक्त नियुक्ति भी विधि सम्मत ही की गई है।

अब देखना है कि, शिकायतकर्ता की शिकायत सही पाई जाती है या फिर मोबेलाईजर के पद पर होते हुए की गई अतिथि शिक्षक पद पर नियुक्ति को सही बताया जाता है। यह जानकारी तो शिकायतकर्ता द्वारा मामले में की गई कार्रवाई की प्रमाणिक जानकारी मांगने के बाद ही सामने आएगा।

असालिया पंचायत में मोबेलाईजर की नियुक्ति में सोनी नें पति के सरनेम निनामा बताया एवं मानदेय प्राप्त किया।

अतिथि शिक्षक की नियुक्ति में पिता का सरनेम लगाकर अपने आप को कटारा बताया और 14 हजार प्रतिमाह का मानदेय प्राप्त किया।

गैर पुरूष से अवैध संबंध, महिला को दी तालिबानी सजा

माही की गूंज, काकनवानी। नरेश पंचाल

झाबुआ जिले में खासकर आदिवासी समाज में कई ऐसे मामले देखने में आते हैं जिस में विवाहित महिला गैर पुरुष से नाजायज संबंध बन जाते हैं। और आदिवासी समाज में चल रही पुरानी प्रथा जिस को भांजगड़ी कहा जाता है। उक्त भांजगड़ी प्रथा के तहत कोई भी विवाहित महिला का किसी गैर पुरुष से नाजायज संबंध होने का मामला सामने आने पर या आदिवासी विवाहित महिला गैर पुरुष के पास चले जाने के आते है। जिसमे कई मामलो में पुलिस में शिकायतें होती है, और कई मामलों में बिना पुलिस की शिकायत के आदिवासी प्रथा अनुसार भांजगड़ी की जाती है और महिला को लाने के साथ भांजगडी प्रथा में जिस गैर पुरुष के साथ महिला जाती है उस पुरुष की ओर से भांजगडीयों (पंचों)के मध्य जो राशि तय होती है वह राशि लड़की के पिता को नहीं देते हुए विवाहित पति-परिवार को दी जाती है।

सजा :महिला के बाल काटे व पति को कंधे पर बिठाकर गाव में घुमाया।

हम वैसे तो इस भांजगडी प्रथा का विरोध करते हैं परंतु आदिवासी समाज में कई मामलों में यह प्रथा को गलत नहीं कहा जा सकता है। आदिवासी समाज में यह एक बात रहती है कि, जब समाज व पंचों के मध्य भांजगडी प्रथा होकर मामला लेनदेन के साथ निपट जाता है तो उसके बाद कोई बैर या विवाद बाकी नहीं रहता है। यानी कि मामला कितना भी बड़ा हो या कोई भी हो अगर पंचों के बीच भांजगडी में मामला निपट जाता है, तो दोनों परिवार के बीच सुलह होकर समझौते हो जाते हैं। लेकिन काकनवानी थाने में एक ऐसा मामला आया है जिसमें भांजगड़ी में मामला निपटने के बाद महिला को तालिबानी सजा दी गई है।

बता दे कि, काकनवानी थाना अंतर्गत ग्राम बालवासा निवासी दिलीप पिता बाबू भूरिया की शादी 10 वर्ष पूर्व ग्राम पीपला निवासी की महिला से हुई थी। दिलीप एवं पत्नी के दो बच्चे हैं ,परंतु महिला का शादी के 10 वर्ष बाद ग्राम छायन के एक व्यक्ति से प्रेम प्रसंग हो गया और वह महिला पति को छोड़ प्रेमी के यहां चली गई। जिसके बाद भांजगडी प्रथा हुई और एक 1 लाख 85 हजार में तय हुआ कि, महिला एवं प्रेमी से किसी प्रकार का विवाद नहीं रहेगा तथा महिला अपने पति के साथ रहेगी।

उक्त मामला भांजगडी में निपटने के बाद महिला, प्रेमी को छोड़ पति दिलीप भूरिया के पास आ गई। लेकिन भले ही मामला समाज में निपट गया था, परंतु अपनी आदिवासी परंपरा के विपरीत जाकर पति दिलीप बाबू भूरिया (30), शैलेश पिता परथिंग भूरिया(35), बाबू पिता गोवर्धन भूरिया(48)निवासी बालवासा, सूर्या पिता रसिया डामोर (28) निवासी पलासडोर आदि अन्य लोगों के साथ 12 अप्रैल रविवार की आधी रात में महिला को प्रेमी संग जाने पर लट्ठों से सामूहिक रूप से पीटा और सर के बाल काट दिए और महिला के कंधे पर पति को बिठाकर गांव में घुमाया।

उक्त तालिबानी सजा का वीडियो वायरल होने पर पुलिस एवं प्रशासन भी हरकत में आया और महिला की रिपोर्ट पर पति दिलीप, बाबू ,शैलेश और सूर्या के साथ अन्य व्यक्तियों के विरूध धारा 34,76 ,85 ,296 (ए),115(2),351(3),3(5)बीएनएस के तहत मामला दर्ज कर चार आरोपियों को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया है बाकी आरोपी फरार है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक, अलका भटेवरा द्वारा काम्पेक प्रिन्टर्स प्रायवेट लिमिटेड, 3/54, प्रेस कॉम्प्लेक्स, ए. बी. रोड, इंदौर से मुद्रित एवं 499, बाजना मार्ग, गणेश मंदिर के सामने, खवासा, तहसील थांदला, जिला-झाबुआ (म.प्र.) से प्रकाशित। प्रधान संपादक- संजय भटेवरा। मोबाइल नं. -95898-82798 (सभी विवादों का न्यायालय क्षेत्र झाबुआ रहेगा) आरएनआई नंबर- एमपीएचआईएन/2018/76422